

न्यू यॉर्क टाइम्स की बेस्टसेलिंग पुस्तक
द 21 इररिफ्यूटेबल लॉज ऑफ लीडरशिप के लेखक

जॉन सी. मैक्सवेल

जीतने का नज़रिया

जिसे हर लीडर को जानना ही चाहिए

अनुवाद : डॉ. सुधीर दीक्षित



Hindi translation of *Attitude 101*

जीतने
का
नज़रिया

जीतने का नज़रिया

जिसे हर लीडर को जानना ही चाहिए

जॉन सी . मैक्सवेल

अनुवाद : डॉ . सुधीर दीक्षित



ਮंਜुल पब्लिशिंग हाउस

First published in India by



Manjul Publishing House

Corporate and Editorial Office

• 2nd Floor, Usha Preet Complex,

42 Malviya Nagar, Bhopal 462 003 - India

Sales and Marketing Office

• 7/32, Ground Floor, Ansari Road,

Daryaganj, New Delhi 110 002 - India

Website : www.manjulindia.com

Distribution Centres

Ahmedabad, Bengaluru, Bhopal, Kolkata, Chennai,

Hyderabad, Mumbai, New Delhi, Pune

Hindi translation of *Attitude 101* by John C. Maxwell

This edition first published in 2014

Third impression 2016

Originally Published in the USA under title: Attitude 101

Copyright © 2003 by Maxwell Motivation Inc.

Published by permission of Thomas Nelson,

Nashville, Tennessee, USA

www.thomasnelson.com

All rights reserved.

Further reproduction or distribution is prohibited

ISBN 978-81-8322-434-5

Translation by Dr . Sudhir Dixit

All rights reserved . No part of this publication may be reproduced,

stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any

form, or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording

or otherwise) without the prior written permission of the publisher. Any

person who does any unauthorized act in relation to this

publication
may be liable to criminal prosecution
and civil claims for damages.

अनुक्रमणिका

प्रकाशक की प्रस्तावना

खंड एक: नज़रिये का प्रभाव

1 नज़रिया किस प्रकार नेतृत्व को प्रभावित करता है?

2 नज़रिया किसी इंसान को कैसे प्रभावित करता है?

खंड दो : नज़रिये का निर्माण

3 किसी व्यक्ति के नज़रिये को कौन सी चीज़ें आकार देती हैं?

4 क्या नज़रिया बदला जा सकता है?

5 क्या बाधाएँ सचमुच नज़रिये को बेहतर बना सकती हैं?

खंड तीन: सही नज़रिये के साथ भविष्य

6 असफलता क्या है?

7 सफलता क्या है?

8 लीडर किस तरह चढ़ता रह सकता है?

लेखक के बारे में

प्रकाशक की प्रस्तावना

किसी व्यक्ति का नज़रिया कैसा है , इस बारे में परवाह क्यों करें? जब तक कि कोई अपना काम अच्छी तरह कर सकता है , तब तक आपको इसके बारे में बहुत ज्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए , है ना? यदि जॉन मैक्सवेल को इस बात पर यक़ीन होता , तो जीतने का नज़रिया नामक यह पुस्तक इस वक्त आपके हाथों में नहीं होती ।

अमेरिका के अग्रणी नेतृत्व विशेषज्ञ डॉ . मैक्सवेल ने लोगों को अधिक सफल बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है । उनकी पुस्तकें और सेमिनार्स में सिखाया जाता है कि कोई भी सचमुच सफल हो सकता है , बशर्ते वह चार क्षेत्रों में महारत हासिल कर ले : संबंध सामर्थ्य , नज़रिया और नेतृत्व । यह पुस्तक इस तरह तैयार की गई है , ताकि आप नज़रिये के बारे में अनिवार्य जीतने का नज़रिया बातें जान लें - तुरंत , आसानी से पढ़ने वाले रूप में ।

लोगों का जीवन बहुत व्यस्त है । उनका समय मूल्यवान है , लेकिन इसके बावजूद वे अत्यधिक जानकारी के बोझ से दबे जा रहे हैं । जितनी जानकारी पिछले पाँच हज़ार सालों में उत्पन्न हुई थी , उससे अधिक नई जानकारी पिछले तीस वर्षों में उत्पन्न हो चुकी है । न्यूयॉर्क टाइम्स के वीकडे एडिशन में इतनी जानकारी रहती है , जितनी कि सत्रहवीं सदी के इंग्लैंड में रहने वाले आम आदमी को जीवन भर में भी नहीं मिलती । संसार में उपलब्ध जानकारी की मात्रा पिछले पाँच साल में दोगुनी हो गई है और यह आगे भी दोगुनी होती रहेगी ।

यह पुस्तक नज़रिये पर संक्षिप्त पाठ्यक्रम है (यह लीडरशिप के प्रभावशाली सूत्र , रिलेशनशिप 101 और इक्विपिंग 101 की साथी पुस्तक है ।) डॉ . मैक्सवेल इस बात को जानते हैं कि इंसान के रूप में आपके नज़रिये का आपके जीवन पर गहरा असर होता है । यदि आप लीडर हैं , तो आप उन लोगों

के नज़रियों को नज़र नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते , जिनका आप नेतृत्व करते हैं और जिनसे आप सफलता हासिल करने की उम्मीद करते हैं – चाहे आप किसी कंपनी का नेतृत्व कर रहे हों या फिर परिवार , खेल टीम या स्वयंसेवियों के समूह का । किसी इंसान का नज़रिया उसके संबंधों पर असर डालता है , उसके असफलता संबंधी दृष्टिकोण में रंग भरता है और सफलता के प्रति उसकी नीति को परिभाषित करता है । नज़रिया आपको बना सकता है और मिटा भी सकता है ।

हम जीतने का नज़रिया पुस्तक प्रकाशित करके प्रसन्न हैं , क्योंकि हमें अहसास है कि जीवन में बहुत कम चीजें सकारात्मक नज़रिये जितनी मूल्यवान हैं । जीतने का नज़रिया आपको और आपकी टीम को सफलता दिलाने , मज़बूत बनाने के लिए तैयार की गई है , ताकि आप सही क्रिस्म के नज़रिये से लैस हो जाएँ । तो यह पुस्तक आपकी सफलता – और आपके अगले स्तर तक पहुँचने के नाम !

खंड 1

नज़रिये का प्रभाव

नज़रिया किस प्रकार नेतृत्व को प्रभावित करता है?

नज़रिया हमेशा आपकी टीम का “खिलाड़ी” होता है।

बड़े होते समय मैं बास्केटबॉल का दीवाना था। यह दीवानगी चौथे ग्रेड में ही शुरू हो गई थी, जब मैंने पहली बार हाई स्कूल का बास्केटबॉल मैच देखा। मैं मंत्रमुद्ध हो गया। उसके बाद कॉलेज जाने तक मैं लगभग हर दिन घर में बने छोटे होम कोर्ट पर शूटिंग और पिकअप गेम्स का अभ्यास करता था।

हाई स्कूल पहुँचने तक मैं काफी अच्छा खिलाड़ी बन चुका था। मैंने अपने फर्स्ट ईयर में जूनियर वर्सिटी टीम में शुरुआत की और जब मैं सेकंड ईयर में पहुँचा, तो हमारी जूनियर वर्सिटी यानी जेवी टीम का रिकॉर्ड 15 – 3 का था, जो वर्सिटी के रिकॉर्ड से बेहतर था। हमें अपने प्रदर्शन पर गर्व था – शायद ज़रूरत से कुछ ज्यादा।

अगले साल ओहायो की हाई स्कूल बास्केटबॉल में रुचि रखने वाले आलोचक सोच रहे थे कि हमारी टीम डिवीज़न की स्टेट चैंपियनशिप जीत सकती है। मेरा अनुमान है उन्होंने उन खिलाड़ियों को देखा था, जो पिछले साल की वर्सिटी टीम से सीनियर्स के रूप में लौटेंगे और उन्होंने उस प्रतिभा को भी देखा, जो जेवी से ऊपर बढ़ेगी। कुल मिलाकर उनका अनुमान था कि हम शक्तिपुंज साबित होंगे। और हमारे पास प्रतिभा कूट – कूट कर भरी थी। 1960 के दशक के अंत में कितनी हाई स्कूल टीमें कह सकती थीं कि टीम के इक्का –

दुक्का खिलाड़ियों को छोड़कर बाकी सभी बॉल को बास्केट में डाल सकते हैं? लेकिन वह सीज़न हर एक की उम्मीदों से बिलकुल अलग साबित हुआ।

बद से बदतर

सीज़न की शुरुआत से ही टीम समस्याओं से घिर गई। वर्सिटी में हम दो जूनियर थे, जिनमें टीम के लिए खेल शुरू करने की प्रतिभा थी : टीम के सर्वश्रेष्ठ रिबाउंडर जॉन टॉमस और सबसे अच्छा शूटिंग गार्ड यानी मैं खुद। हमने सोचा था कि खेलने का समय योग्यता के आधार पर ही दिया जाएगा और हमारे हिसाब से हम टीम में जगह पाने के हकदार थे। दूसरी ओर, पिछले साल अपने सीनियर्स की वजह से टीम में जगह न पाने वाले सीनियर्स का यह सोचना था कि हमें भी उनका अनुसरण करके बेंच पर बैठना चाहिए और अपने अवसर का इंतज़ार करना चाहिए।

जेवी और वर्सिटी के बीच जो प्रतिद्वंद्विता पिछले साल शुरू हुई थी, वह जूनियर्स और सीनियर्स के युद्ध में बदल गई। अभ्यास करते वक्त भी जूनियर और सीनियर खिलाड़ियों के बीच युद्ध चलता था। मैचों में सीनियर्स जूनियर्स को पास नहीं देते थे और जूनियर्स भी सीनियर्स को पास नहीं देते थे। ये युद्ध इतने खूँखार हो गए कि जल्द ही जूनियर्स और सीनियर्स मैच के दौरान भी बास्केटबॉल कोर्ट पर मिलकर काम नहीं करना चाहते थे। हमारे कोच नेफ़ को हमारी दलबंदी करनी पड़ी। सीनियर्स मैच शुरू करेंगे और जब खिलाड़ी बदलने की ज़रूरत होगी, तो वे एक नहीं, बल्कि पाँच जूनियर्स को मैच में उतारेंगे। यानी एक ही टीम के भीतर दो टीमें खेल रही थीं।

मुझे ठीक - ठीक याद नहीं है कि यह प्रतिद्वंद्विता किसने शुरू की, जिससे हमारी टीम विभाजित हुई लेकिन इतना अच्छी तरह याद है कि जॉन टॉमस और मैंने इसे जल्द ही आत्मसात कर लिया था। मैं हमेशा से एक लीडर रहा हूँ और मैंने टीम के दूसरे सदस्यों को प्रभावित करने में अपना योगदान दिया। मुझे अफ़सोस के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि मैं जूनियर्स को ग़लत दिशा में ले गया।

एक - दो खिलाड़ियों के ब्यूरो नज़रिये की वजह से जो शुरू हुआ था, उससे स्थिति हर एक के लिए भयंकर हो गई। जब हम प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़े, तब तक प्रतिद्वंद्विता करने के अनिच्छुक खिलाड़ी भी इससे प्रभावित हो गए। वह

सीज़न भयंकर था । अंततः हमारा रिकॉर्ड औसत रहा और हम कभी अपनी संभावना के क्रीब नहीं पहुँच पाए । इससे आपको यह बात पता चलती है कि सड़े नज़रिये किसी टीम को बर्बाद कर देते हैं ।

प्रतिभा पर्याप्त नहीं है

हाई स्कूल के बास्केटबॉल अनुभव से मैंने सीखा कि टीम को सफल बनाने के लिए प्रतिभा ही काफ़ी नहीं होती है । ज़ाहिर है, प्रतिभा ज़रूरी होती है । मेरे मित्र लो होल्ड्ज कॉलेज के उत्कृष्ट फुटबॉल कोच हैं और उन्होंने कहा है, “जीतने के लिए आपको बेहतरीन खिलाड़ी चाहिए होते हैं . . . अच्छे खिलाड़ियों के बिना आप मैच नहीं जीत सकते, लेकिन उनके बावजूद आप हार ज़रूर सकते हैं ।” जीतने के लिए प्रतिभावान खिलाड़ियों से अधिक की ज़रूरत होती है ।

हमारे हाई स्कूल की टीम प्रतिभा से लदी हुई थी और यदि इतना ही काफ़ी होता, तो हम स्टेट चैंपियन बन जाते । लेकिन हम सड़े नज़रियों के बोझ तले भी दबे हुए थे । आप जानते हैं कि अंत में प्रतिभा और नज़रिये के बीच होने वाला ज़ंगी मुकाबला कौन जीता । शायद इसीलिए आज मैं सकारात्मक नज़रिये के महत्व को समझता हूँ और मैंने अपने मामले में इस पर बहुत ज़ोर दिया है । मेरे बच्चों के बड़े होते समय मैंने उनके मामले में भी इस पर ज़ोर दिया है और जिन टीमों का मैं नेतृत्व करता हूँ, उनमें भी मैं सकारात्मक नज़रिये पर ज़ोर देता हूँ ।

बरसों पहले मैंने अपनी पुस्तक द विनिंग ऐटिट्यूड में नज़रिये के बारे में कुछ लिखा था । मैं उसे आपको बताना चाहूँगा :

नज़रिया...

यह हमारे सच्चे स्वरूप का “अग्रिम मानव” है ।

इसकी जड़ें अंदर हैं, लेकिन फल बाहर हैं ।

यह हमारा सबसे अच्छा मित्र या सबसे बुरा शत्रु है ।

यह हमारे शब्दों से अधिक सच्चा और एकरूप है ।

यह एक बाहरी निगाह है, जो अतीत के अनुभवों पर आधारित है ।

यह एक ऐसी चीज़ है, जो लोगों को हमारी ओर खींचती है या हमसे दूर धकेलती है ।

यह कभी संतुष्ट नहीं होता , जब तक कि इसे व्यक्त न कर दिया जाए ।

यह हमारे अतीत का पुस्तकालय है ।

यह हमारे वर्तमान का वक्ता है ।

यह हमारे भविष्य का ज्योतिषी है ।

खिलाड़ियों के अच्छे नज़रिये किसी टीम की सफलता की गारंटी नहीं देते हैं , लेकिन बुरे नज़रिये असफलता की गारंटी ज़रूर देते हैं । नज़रियों के बारे में आगे दी गई पाँच सच्चाइयाँ बताती हैं कि वे टीमवर्क और किसी लीडर की टीम पर कैसा प्रभाव डालती हैं :

1 . नज़रियों में किसी टीम को ऊपर उठाने या नीचे गिराने की शक्ति होती है

द विनस एज में वैटली ने कहा था , “कारोबार , पेशेवर समुदाय , शिक्षा , सरकार और घर में सच्चे लीडर्स एक खास स्तर पर बाक़ी समाज से अलग होते हैं । विजेता की खास निपुणता का संबंध पैदाइशी योग्यता , ऊँचे आईक्यू या प्रतिभा से नहीं होता । विजेता की निपुणता का संबंध योग्यता से नहीं , नज़रिये से होता है ।”

दुर्भाग्य से , बहुत से लोग इस धारणा का प्रतिरोध करते हैं । वे यह यक़ीन करना चाहते हैं कि सिर्फ़ प्रतिभा (या अनुभव के साथ प्रतिभा) ही काफ़ी है । लेकिन बहुत सारी प्रतिभावान टीमें अपने खिलाड़ियों के नज़रियों के कारण अंततः : असफल हो जाती हैं ।

मिन्न - मिन्न नज़रिये उच्च प्रतिभा वाले खिलाड़ियों से बनी टीम को प्रभावित कर सकते हैं :

<u>प्रतिभा</u>	+	<u>नज़रिये</u>	=	<u>परिणाम</u>
बेहतरीन प्रतिभा	+	सड़े नज़रिये	=	बुरी टीम
बेहतरीन प्रतिभा	+	ख़राब नज़रिये	=	औसत टीम
बेहतरीन प्रतिभा	+	औसत नज़रिये	=	अच्छी टीम
बेहतरीन प्रतिभा	+	अच्छे नज़रिये	=	बेहतरीन टीम



यदि आप असाधारण परिणाम चाहते हैं , तो आपको बेहतरीन प्रतिभा वाले अच्छे लोगों की ज़रूरत है , जिनके नज़रिये ज़बर्दस्त हों । जब नज़रिये

ऊपर उठते हैं , तो टीम की संभावना भी ऊपर उठती है । जब नज़रिये नीचे गिरते हैं , तो टीम की संभावना भी उनके साथ ही गिर जाती है ।

2 . दूसरों के संपर्क में आने पर नज़रिया फैलता है

टीम की कई चीज़ें संक्रामक नहीं होतीं : मसलन प्रतिभा , अनुभव , और अभ्यास करने की इच्छा । लेकिन एक चीज़ के बारे में यक़ीन से कहा जा सकता है कि यह संक्रामक होती है : यह है नज़रिया । जब टीम का कोई सदस्य सीखने में रुचि लेता है और विनप्रता के फलस्वरूप बेहतर बन जाता है , तो इस बात की अधिक संभावना होती है कि दूसरे भी ऐसा ही गुण प्रदर्शित करेंगे । जब कोई लीडर हताशाजनक परिस्थितियों में भी अपना मनोबल ऊँचा बनाए रखता है , तो दूसरे लोग उसके इस गुण की सराहना करते हैं और उसके जैसा बनना चाहते हैं । जब टीम का कोई सदस्य मेहनत के संस्कार दिखाता है और सकारात्मक प्रभाव दर्शाता है , तो दूसरे उसका अनुकरण करते हैं । देखिए , सच तो यह है कि लोगों में अपने साथियों से प्रेरित होने की प्रवृत्ति होती है । लोगों में उन लोगों के नज़रिये अपनाने की प्रवृत्ति होती है , जिनके साथ वे समय बिताते हैं – वे उनकी मानसिकता , विश्वास और चुनौतियों से मुक़ाबला करने की नीति ग्रहण करने लगते हैं ।

रॉजर बैनिस्टर की कहानी इस बात की प्रेरक मिसाल है कि नज़रिये किस तरह “फैलते” हैं । बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में कई खेल विशेषज्ञ मानते थे कि कोई भी इंसान चार मिनट से कम समय में एक मील की दौड़ पूरी नहीं कर सकता । और लंबे समय तक उनकी बात सही साबित हुई । लेकिन 6 मई 1954 को ब्रिटिश धावक और यूनिवर्सिटी विद्यार्थी रॉजर बैनिस्टर ने ऑक्सफ़ोर्ड की एक प्रतिस्पर्धा में एक मील की दौड़ 3 मिनट 59 . 4 सेकंड में पूरी कर ली । इसके बाद दो महीने से भी कम समय में ऑस्ट्रेलिया के एक और धावक जॉन लैंडी ने भी चार मिनट के अवरोध को तोड़ दिया । इसके बाद तो झड़ी लग गई । दर्जनों और फिर सैकड़ों अन्य धावकों ने यह अवरोध तोड़ दिया । क्यों? क्योंकि सर्वश्रेष्ठ धावकों का नज़रिया बदल गया था । उन्होंने अपने साथियों की मानसिकता और मान्यताओं को ग्रहण कर लिया था ।

बैनिस्टर का नज़रिया और कार्य दूसरों के संपर्क में आने पर फैल गया । उनका नज़रिया दूर - दूर तक फैल गया । आज एक मील की दौड़ में प्रतिस्पर्धा करने वाला हर विश्वस्तरीय धावक चार मिनट से भी कम समय में इसे पूरा सकता है । नज़रिये संक्रामक होते हैं!

3 बुरे नज़रिये अच्छे नज़रियों से ज्यादा तेज़ी से फैलते हैं

अच्छे नज़रिये से अधिक संक्रामक सिर्फ एक ही चीज़ होती है - और वह है बुरा नज़रिया । किसी कारणवश कई लोग सोचते हैं कि नकारात्मक होना फैशनेबल है । मेरे ख्याल से वे मानते हैं कि इससे वे स्मार्ट या महत्वपूर्ण दिखते हैं । लेकिन सच्चाई यह है कि नकारात्मक नज़रिया किसी व्यक्ति की मदद कम , नुकसान ज्यादा करता है । और यह उसके आस - पास के लोगों को भी नुकसान पहुँचाता है ।

नज़रिया या मानसिकता कितनी जल्दी और आसानी से फैल सकती है , इसका उदाहरण नॉर्मन कज़िन्स की इस कहानी में देखने को मिलता है । एक फुटबॉल मैच के दौरान फ़र्स्ट एड स्टेशन पर तैनात एक डॉक्टर ने पाँच लोगों का उपचार किया और उन्हें शक हुआ कि इन लोगों को फूड पॉयज़निंग हो सकती है । जल्द ही उन्हें पता चला कि पाँचों ने स्टेडियम के एक ख़ास कन्सेशन स्टैंड से ड्रिंक्स ख़रीदे थे ।

डॉक्टर ने मैच के उद्घोषक से आग्रह किया कि वह स्टेडियम में मौजूद लोगों को उस ख़ास स्टैंड से ड्रिंक्स न ख़रीदने की हिदायत दे , क्योंकि इससे फूड पॉयज़निंग की आशंका थी । जल्द ही दो सौ से अधिक लोग फूड पॉयज़निंग के लक्षणों की शिकायत करने लगे । लगभग आधे लोगों के लक्षण तो इतने गंभीर थे कि उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा ।

बहरहाल , कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती । थोड़ी और तहकीकात के बाद पता चला कि पाँच मूल शिकारों ने स्टेडियम आते वक्त एक ख़ास जगह से पोटेटो सैलेड खाया था । जब दूसरे “रोगियों” को पता चला कि स्टेडियम के ड्रिंक्स सुरक्षित थे , तो वे चमत्कारिक रूप से ठीक हो गए । इससे आपको बस यह पता चल जाता है कि नज़रिया बहुत जल्दी फैलता है ।

4 . नज़रिये व्यक्तिपरक होते हैं , इसलिए ग़लत नज़रिये को पहचानना मुश्किल हो सकता है

क्या आपको कभी किसी व्यक्ति के साथ पहली मुलाक़ात में ही शक हो गया था कि उसका नज़रिया ख़राब था , लेकिन आप इस बात को नहीं पकड़ पाए थे कि ग़ड़बड़ कहाँ है? मुझे यक़ीन है कि यह अनुभव कई लोगों को हुआ होगा ।

नज़रिया दरअसल इस बारे में है कि कोई व्यक्ति कैसा है । इसका असर बाद में इस पर भी पड़ता है कि वह कैसे काम करता है ।

लोग दूसरों के नज़रियों के बारे में अपने अवलोकन पर शक इसलिए करते हैं, क्योंकि नज़रिये व्यक्तिप्रक होते हैं । हो सकता है कि बुरे नज़रिये वाला इंसान कोई गैर - कानूनी या अनैतिक काम न करे । लेकिन इसके बावजूद उसका नज़रिया टीम को बर्बाद कर सकता है ।

लोग अंदर से जैसा महसूस करते हैं, बाहर भी हमेशा उसी को प्रकट करते हैं । नज़रिया दरअसल इस बारे में है कि कोई व्यक्ति कैसा है । इसका असर बाद में इस पर भी पड़ता है कि वह कैसे काम करता है । मैं आपको कुछ आम ख़राब नज़रियों के बारे में बताना चाहूँगा, जिनसे टीम बर्बाद होती है, ताकि आप देखते ही उनकी असलियत पहचान लें ।

गलती स्वीकार करने की अक्षमता । क्या आपने कभी ऐसे लोगों के साथ समय बिताया है, जो कभी अपनी गलती नहीं मानते? यह बहुत दुखद होता है । कोई भी इंसान आदर्श नहीं होता, लेकिन जो खुद को आदर्श मानता है, वह टीम का आदर्श साथी नहीं होता । उसके गलत नज़रिये की वजह से हमेशा संघर्ष उत्पन्न होगा ।

क्षमा करने की असफलता । कहा जाता है कि आधुनिक नर्सिंग की संस्थापक क्लारा बार्टन को एक बार उकसाया गया कि वे बरसों पहले उनके साथ हुई एक क्रूर घटना पर अफसोस ज़ाहिर करें, लेकिन बार्टन इस जाल में नहीं फँसी ।

मित्र ने उकसाया, “क्या तुम्हें याद नहीं है कि तुम्हारे साथ क्या अन्याय किया गया था?”

बार्टन ने जवाब दिया, “नहीं, मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं उसे भूल चुकी हूँ ।”

द्वेष पालना कभी भी सकारात्मक या सही नहीं होता । और जब टीम के साथी एक - दूसरे को क्षमा नहीं करते हैं, तो इससे टीम को शर्तिया नुकसान होता है ।

ओछी ईर्ष्या । बराबरी करने की इच्छा एक ऐसा नज़रिया है, जो सचमुच लोगों के खिलाफ़ काम करता है, क्योंकि इससे ओछी ईर्ष्या को बढ़ावा मिलता है। किसी कारणवश इस नज़रिये वाले लोग मानते हैं कि हर व्यक्ति के साथ एक जैसा बर्ताव होना चाहिए, चाहे योग्यता, प्रदर्शन या प्रभाव में कितनी भी मिन्नता हो। लेकिन कोई चीज़ सच्चाई से इससे अधिक दूर नहीं हो सकती। हममें से प्रत्येक अनूठा है और हम अलग - अलग तरीके से प्रदर्शन करते हैं, इसलिए हमारे साथ उसी अनुसार व्यवहार किया जाएगा।

मैं का रोग। अपनी पुस्तक द विनर विदिन में बेहद सफल एनबीए कोच पैट राइली ने “मैं के रोग” के बारे में लिखा है। वे इसके शिकार टीम सदस्यों के बारे में लिखते हैं, “उन्हें अपने खुद के महत्व में बहुत प्रबल विश्वास होता है। उनके कार्य सबके सामने लगभग चिल्लाकर यह दावा करते हैं, ‘मैं ही हूँ जो हूँ।’” राइली कहते हैं कि इस रोग का हमेशा एक ही अवश्यंभावी परिणाम होता है: “हम की पराजय।”

आलोचनात्मक स्वभाव। फ्रेड और मार्था चर्च की प्रार्थना के बाद घर लौट रहे थे। मार्था ने पूछा, “फ्रेंड, क्या तुमने गौर किया कि आज पादरी का प्रवचन थोड़ा कमज़ोर था?”

फ्रेंड ने कहा, “नहीं तो।”

“अच्छा, तो क्या तुमने सुना कि गायन मंडली के भजनों में दम नहीं था?”

फ्रेड ने प्रतिक्रिया की, “नहीं, उस तरफ़ मेरा ध्यान नहीं गया।”

“अच्छा, तो तुमने निश्चित रूप से हमारे ठीक सामने बैठे युवा दंपति और उनके छोटे बच्चों पर तो गौर किया होगा, जो पूरी प्रार्थना के दौरान शोर - शराबा कर रहे थे और हल्ला मचा रहे थे।”

“मुझे अफ़सोस है, लेकिन नहीं, मैंने इस बात पर भी गौर नहीं किया।”

आखिरकार मार्था झुँझलाकर बोली, “सच कहूँ फ्रेड, मैं नहीं जानती कि तुम चर्च जाने की ज़हमत ही क्यों उठाते हो?”

जब टीम के किसी व्यक्ति का स्वभाव आलोचनात्मक होता है, तो सबको इसका पता चल जाता है, क्योंकि ग़लती टीम के हर व्यक्ति से हो सकती है।

सारा श्रेय खुद लेने की इच्छा । टीम को नुकसान पहुँचाने वाला एक और बुरा नज़रिया भी मैं के रोग” जैसा ही है । लेकिन जहाँ मैं के रोग का शिकार व्यक्ति पृष्ठभूमि में रहकर मतभेद पैदा करता है , वहाँ श्रेय लेने वाला लगातार मंच पर जाकर श्रेय लेता रहता है – चाहे वह इसका हक्कदार हो या न हो । उसका नज़रिया एनबीए हॉल ऑफ फ़ेम के सेंटर बिल रसेल के विपरीत होता है , जिन्होंने बास्केटबॉल कोर्ट पर अपने प्रदर्शन के बारे में कहा था , “किसी मैच में मैं कितना अच्छा खेला , इसका सबसे महत्वपूर्ण पैमाना यह है कि मेरी बदौलत मेरी टीम के साथी कितना बेहतर खेले ।”

निश्चित रूप से कई अन्य नकारात्मक नज़रिये भी हैं , जिनका मैंने ज़िक्र नहीं किया है , लेकिन मेरा इरादा हर बुरे नज़रिये की सूची देना नहीं है - सिर्फ़ सबसे आम बुरे नज़रियों का उल्लेख करना है । संक्षेप में , सबसे बुरे नज़रिये स्वार्थ का परिणाम होते हैं । यदि आपकी टीम का कोई साथी दूसरों को नीचा दिखाता है , टीमवर्क की धज्जियाँ उड़ाता है या खुद को टीम से अधिक महत्वपूर्ण मान लेता है , तो आप यक़ीन कर सकते हैं कि आपके सामने एक बुरे नज़रिये वाला इंसान है ।

5 सड़े नज़रियों को यूँ ही छोड़ दिया जाए , तो वे हर चीज़ को बर्बाद कर देते हैं

बुरे नज़रियों पर ध्यान देना ज़रूरी है । इस बात पर यक़ीन कर लें कि वे हमेशा टीम में मतभेद , द्वेष , प्रतिस्पर्धा और फूट उत्पन्न करेंगे । और यदि उन्हें नहीं सुलझाया गया , तो वे कभी अपने आप ख़त्म नहीं होंगे । वे बस नासूर की तरह पूरी टीम को – और पूरी संभावना तक पहुँचने के इसके अवसरों को भी – बर्बाद कर देंगे ।

चूँकि बुरे नज़रिये वाले लोगों के साथ पेश आना बहुत मुश्किल होता है और चूँकि नज़रिये बहुत व्यक्तिपरक होते हैं , इसलिए किसी सड़े नज़रिये वाले व्यक्ति के सामने आने पर आपको अपने सहज बोध पर शक हो सकता है । आखिर , यदि यह सिर्फ़ आपकी राय है कि उसका नज़रिया ख़राब है , तो आपको उसे सुधारने का कोई हक्क नहीं है , है ना? नहीं ! यदि आप टीम की परवाह करते हैं , तो आपको इसका पूरा हक्क है । सड़े नज़रिये किसी भी टीम को बर्बाद कर देते हैं । यह हमेशा सच होता है । यदि आप अच्छे सेबों की टोकरी में एक सड़ा सेब रख दें , तो अंततः : आपके पास सड़े सेबों की टोकरी ही रहेगी ।

राष्ट्रपति टॉमस जेफ़रसन ने कहा था , “कोई भी चीज़ सही मानसिक नज़रिये वाले व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक पहुँचने से नहीं रोक सकती ; वहीं इस संसार की कोई भी चीज़ ख़राब मानसिक नज़रिये वाले व्यक्ति की मदद नहीं कर सकती । ” यदि आप टीम की परवाह करते हैं और सभी खिलाड़ियों की मदद के प्रति समर्पित हैं , तो आप बुरे नज़रिये को नज़रअंदाज़ अंदाज़ नहीं कर सकते ।

जिस व्यक्ति का नज़रिया बुरा है , उससे पेश आना बहुत पेचीदा मामला हो सकता है । इस मुद्दे को सुलझाने की कोशिश करने से पहले आपको लाभ होगा , यदि आप नज़रियों पर अधिक क़रीबी गौर कर लें और इस पर भी कि वे किसी इंसान को कैसे प्रभावित करते हैं ।

नज़रिया किसी इंसान को कैसे प्रभावित करता है?

आपका नज़रिया और आपकी क्षमता साथ-साथ चलते हैं।

नज़रिया क्या है? आप इस पर अपनी अँगुली कैसे रख सकते हैं? देखिए, नज़रिया एक अंदरूनी भाव है, जो व्यवहार द्वारा प्रकट होता है। इसीलिए नज़रिये को बिना एक शब्द कहे भी देखा जा सकता है। क्या हमने रुठने वाले के मुँह फुलाने” या संकल्पवान व्यक्ति के “तने जबड़े” को नहीं देखा है? हमारे परिधान में हमारा हाव-भाव सबसे महत्वपूर्ण होता है।

कई बार बाहर से हम अपने नज़रिये पर नक़ाब लगा सकते हैं और दूसरे लोगों को मूर्ख बना सकते हैं। लेकिन आम तौर पर ये नक़ाब ज्यादा लंबे समय तक नहीं चलते हैं। निरंतर संघर्ष चलता रहता है, क्योंकि नज़रिया बाहर निकलने की कोशिश में छटपटाता रहता है।

मेरे पिता को चार साल के बच्चे की कहानी सुनाने में आनंद आता था, जिसका दिन मुश्किलों से भरा रहा था। उसे फटकारने के बाद उसकी माँ ने आखिरकार उससे कहा, “बेटा, अब उस कुर्सी पर जाओ और उस पर बैठ जाओ!” छोटा लड़का उस कुर्सी तक गया, उस पर बैठगया और बोला, “मम्मी, मैं बाहर तो बैठा हुआ हूँ, लेकिन अंदर मैं खड़ा हुआ हूँ।”

मनोवैज्ञानिक / दार्शनिक जेस्स एलन ने कहा है, “ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई इंसान अंदर यात्रा करे, लेकिन बाहर स्थिर खड़ा रहे।” हमारे भीतर जो हो रहा है, वह जल्दी ही हमारे बाहर होने वाली चीज़ों पर असर डालेगा। सख्त

नज़रिया एक बुरा रोग है। यह बंद दिमाग़ और स्याह भविष्य का कारण बन जाता है। जब हमारा नज़रिया सकारात्मक और विकास के अनुकूल होता है, तो मस्तिष्क विस्तार करता है और तरक्की शुरू हो जाती है।

नज़रिया सफलता या असफलता तय करता है

साउथ कैरोलिना में एक सम्मेलन का नेतृत्व करते समय मैंने एक प्रयोग किया। मैंने श्रोताओं से पूछा, “कौन सा शब्द हमारी खुशी, स्वीकृति, शांति और सफलता को तय करता है? श्रोता नौकरी, शिक्षा, धन, समय जैसे शब्द बोलने लगे। आखिरकार किसी ने कहा नज़रिया। उन्होंने अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को लाभम् भुला ही दिया था। हमारा नज़रिया ही वह सबसे बड़ी शक्ति है, जो इस बात को तय करेगी कि हम सफल होते हैं या असफल।

कुछ लोगों का नज़रिया ऐसा होता है कि उन्हें हर अवसर में मुश्किल दिखाई देती है; बाकी का नज़रिया ऐसा होता है कि उन्हें हर मुश्किल में एक अवसर दिखता है। कुछ सकारात्मक नज़रिये के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं, जबकि बाकी नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ नीचे गिर जाते हैं। नज़रिया “कुछ को बना देता है,” जबकि “कुछ को मिटा देता है” – यह तथ्य हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण है कि हमें इसके महत्व पर अधिक गौर करने की ज़रूरत है। यहाँ पर नज़रिये के बारे में सात स्वयंसिद्ध सिद्धांत दिए जा रहे हैं, जिनसे आपको बेहतर समझ आ जाएगा कि नज़रिया किसी इंसान के जीवन पर कैसे असर डालता है। :

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 1 : हमारा नज़रिया जीवन के प्रति हमारी नीति को तय करता है

हमारा नज़रिया हमें बताता है कि हम जीवन से क्या उम्मीद करते हैं। किसी हवाई जहाज की तरह, यदि हमारी “नाक” ऊपर की तरफ होती है, तो इसका मतलब है कि हम उड़ान भर रहे हैं। यदि यह नीचे की तरफ होती है, तो शायद हम दुर्घटना की ओर बढ़ रहे हैं।

एक दादा - दादी की कहानी मुझे बड़ी पसंद है, जो अपने पोतों से मिलने गए। हर दोपहर को दादाजी झपकी लेने के लिए लेट जाते थे। एक दिन मस्खरी में बच्चों ने उनकी मूँछ में लिम्बार चीज़ लगा दी। जल्द ही वे नाक - भौं सिकोड़ते हुए जागे। उठने पर वे बोले, “यह क्या, इस कमरे में तो भयंकर

बदबू आ रही है । ” बदबू दूर करने के लिए वे किचन में चले गए । वहाँ उन्हें इस निर्णय पर पहुँचने में ज्यादा देर नहीं लगी कि किचन में भी बदबू आ रही थी, इसलिए वे ताज़ा हवा लेने के लिए बाहर टहलने चल दिए । दादाजी को बड़ी हैरानी हुई, जब खुली हवा में भी उन्हें कोई राहत नहीं मिली और उन्होंने घोषणा की, “पूरा संसार बदबूदार है !”

यह जीवन के बारे में कितना सच है ! जब हम अपने नज़रियों में “लिम्बार्ग चीज़” लेकर चलते हैं, तो पूरा संसार बदबूदार लगता है । हम जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण के लिए व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदार हैं । यह सत्य युगों - युगों से ज्ञात है और बाइबल में भी इसका उल्लेख है : “इंसान जो बोएगा, वही काटेगा । ” जीवन के प्रति और जीवन में कर्म के प्रति हमारा नज़रिया यह तय करने में मदद करेगा कि हमारे साथ क्या होता है ।

बुरे नज़रियों के कारण कितने लोगों ने नौकरियाँ खो दीं, प्रमोशन के कितने अवसर छूक गए, कितनी बिक्रियाँ नहीं हुई और कितने विवाह बर्बाद हुए, इसका आकलन करना संभव नहीं है । लेकिन लगभग हर दिन हम ऐसी नौकरियों के साक्षी होते हैं, जो क्रायम तो हैं, लेकिन जिनसे नफरत की जाती है । हम ऐसे विवाहों के चश्मदीद गवाह होते हैं, जो क्रायम तो हैं, लेकिन दुख भरे हैं, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि लोग दूसरों के या संसार के बदलने का इंतज़ार कर रहे हैं और उन्हें यह अहसास ही नहीं है कि अपने व्यवहार के लिए वे खुद ज़िम्मेदार हैं ।

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 2 : हमारा नज़रिया लोगों के साथ हमारे संबंधों को तय करता है,

लोगों के साथ आपके संबंधों का प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ता है, लेकिन संबंध बनाना मुश्किल होता है । कुछ लोगों के साथ आप खुशनुमा संबंध नहीं बना पाते हैं, लेकिन उनके बिना आप सफल भी नहीं हो सकते । इसीलिए हमारे भीड़ भरे संसार में दूसरों के साथ सही संबंध बनाना अनिवार्य है ।

द स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट कहता है कि किसी भी क्षेत्र में होने वाली आमदनी का सिर्फ़ 12.5 प्रतिशत ज्ञान से तय होता है, जबकि 87.5 प्रतिशत लोगों के साथ पेश आने की आपकी योग्यता से तय होता है ।

87.5% लोगों का ज्ञान + 12.5% प्रॉडक्ट का ज्ञान = सफलता इसीलिए टेडी रुज़वेल्ट ने कहा था, “सफलता के फ़ॉर्मूले का सबसे महत्वपूर्ण घटक यह जानना है कि लोगों के साथ अच्छे संबंध कैसे रखे जाएँ । ” और इसीलिए जॉन डी रॉकफेलर ने कहा था, “लोगों के साथ पेश आने की योग्यता के लिए मैं इतने

अधिक पैसे देने को तैयार हूँ, जितने इस पृथ्वी की किसी भी अन्य योग्यता के लिए नहीं दृगा । ”

जब हमारा नज़रिया दूसरों को पहले स्थान पर रखता है और हम लोगों को महत्वपूर्ण मानते हैं, तो हमारा नज़रिया हमें अपना नहीं, उनका दृष्टिकोण दिखाएगा । जब तक कि हम दूसरे व्यक्ति के जूतों में नहीं चलते हैं और सामने वाले की आँखों से जीवन को नहीं देखते हैं, हम उस आदमी की तरह होंगे, जो एक कार से दुर्घटना के बाद अपनी कार से गुस्से में कूदा था । उसने आगबबूला होकर कहा था, “तुम लोग कार देखकर क्यों नहीं चलाते कि तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारी कार चौथी कार है, जिससे आज मेरी टक्कर हुई है !”

आम तौर पर किसी संगठन के भीतर जो इंसान तरक्की करता है उसका नज़रिया अच्छा होता है । ध्यान देने वाली बात यह है कि प्रमोशनों के कारण उस व्यक्ति को असाधारण नज़रिया नहीं मिला था, दरअसल असाधारण नज़रिये के कारण उसे प्रमोशन मिले थे ।

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 3 : अक्सर हमारा नज़रिया ही सफलता और असफलता के बीच का एक मात्र फ़र्क होता है

इतिहास की महानतम उपलब्धियाँ उन लोगों ने हासिल कीं, जो अपने क्षेत्र में ढेर सारे अन्य लोगों की भीड़ से बस थोड़े से ही ज्यादा उत्कृष्ट थे । इसे हल्की धार का सिद्धांत कहा जा सकता है । कई बार यह हल्का सा फ़र्क बस नज़रिया था । इज़राइल की पूर्व प्रधानमंत्री गोल्डा मेडर ने इस सत्य को अपने एक इंटरव्यू में रेखांकित किया था । उन्होंने कहा था, “मेरे देश के पास बस ज़ज्बा है । हमारे पास पेट्रोलियम डॉलर नहीं हैं । हमारे पास ज़मीन में भारी दौलत की खानें नहीं हैं । हमारे पास विश्वव्यापी सार्वजनिक राय का समर्थन नहीं है, जो हमें अच्छी नज़रों से देखता हो । इज़राइल के पास बस इसके लोगों का ज़ज्बा है । और अगर हमारे लोगों ने अपना ज़ज्बा खो दिया, तो संयुक्त राष्ट्र अमेरिका भी हमें नहीं बचा सकता ।”

निश्चित रूप से योग्यता जीवन में हमारी सफलता के लिए महत्वपूर्ण है । बहरहाल, किसी भी काम में सफलता या असफलता मानसिक क्षमताओं से कम, मानसिक नज़रिये से अधिक तय होती है । मुझे वे समय याद हैं, जब मेरी पत्नी मार्गरेट टीचिंग स्कूल से कुंठित होकर घर लौटती थी, क्योंकि आधुनिक शिक्षा नज़रिये के बजाय योग्यता पर जोर देती थी । वह चाहती थी कि बच्चों का परीक्षण सिर्फ़ आई क्यू . ((इंटेलिजेंस क्वोशंट)) के आधार पर ही न हो,

बल्कि ए क्यू . (अटीट्यूड क्वोशंट) के आधार पर भी किया जाए । वह उन बच्चों के बारे में बात करती थी, जिनका आई क्यू . तो ऊँचा था, लेकिन उनका प्रदर्शन कमज़ोर था । दूसरी ओर ऐसे बच्चे भी थे, जिनका आई क्यू . तो कम था, लेकिन उनका प्रदर्शन ऊँचा था ।

एक पिता होने के नाते मुझे उम्मीद है कि मेरे बच्चों के पास उत्कृष्ट दिमाग़ और असाधारण नज़रिया है । लेकिन अगर मुझे “यह या वह” ’ वाली स्थिति में चुनाव करना पड़े, तो बिना किसी डिझाइन के मैं चाहूँगा कि उनका ए . क्यू . ऊँचा रहे

येल यूनिवर्सिटी के एक प्रेसिडेंट ने कुछ साल पहले ओहायो स्टेट के पूर्व प्रेसिडेंट को इससे मिलती - जुलती सलाह दी थी : “हमेशा अपने ए और बी विद्यार्थियों के प्रति दयालु रहें । किसी दिन उनमें से कोई अच्छे प्रोफेसर के रूप में आपके कैंपस में लौटेगा । और अपने सी विद्यार्थियों के प्रति भी दयालु रहें । किसी दिन उनमें से कोई लौटेगा और विज्ञान प्रयोगशाला बनवाने के लिए बीस लाख डॉलर दान में देगा । ”

लोगों में बहुत कम फ़र्क होता है, लेकिन उसी छोटे से फ़र्क बहुत बड़ा फ़र्क पड़ता है । यह छोटा फ़र्क है नज़रिया । बड़ा फ़र्क यह है कि यह सकारात्मक है या नकारात्मक ।

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 4 : किसी काम की शुरुआत में हमारा नज़रिया इसके परिणाम को किसी दूसरी चीज़ से अधिक प्रभावित करेगा

कोच इस बात के महत्व को समझते हैं कि किसी मुश्किल प्रतिस्पर्धी का सामना करने से पहले टीमों का नज़रिया सही होना चाहिए । सर्जन चाहते हैं कि ऑपरेशन कराने से पहले उनके मरीज़ मानसिक रूप से तैयार हों । नौकरी तलाश करने वाले जानते हैं कि जब वे नौकरी के लिए आवेदन देते हैं, तो उनका संभावित नियोक्ता सिर्फ़ योग्यताओं से अधिक की तलाश कर रहा है । सार्वजनिक वक्ता अपने श्रोताओं के सामने बोलने से पहले एक अनुकूल माहौल चाहते हैं । क्यों? क्योंकि शुरुआत में सही नज़रिया हो, तो अंत में मिलने वाली सफलता सुनिश्चित हो जाती है । आपने यह कहावत सुनी होगी, “अंत भला, सो सब भला । ” उतना ही सच यह भी है, “श्रीगणेश सही तो सब सही । ”

अधिकतर प्रोजेक्ट्स शुरू होने से पहले ही असफल या सफल हो जाते हैं । एक युवा पर्वतारोही और एक अनुभवी गाइड सिएराज़ में एक ऊँचे शिखर पर चढ़ रहे थे । एक सुबह युवा पर्वतारोही को अचानक ज़ोर की कड़कड़ाहट सुनाई

दी । उसे विश्वास हो गया कि संसार ख़त्म हो रहा था । गाइड ने कहा, “यह संसार का अंत नहीं है, बस एक नए दिन की शुरुआत है ।” सूरज उगने पर बर्फ पर धूप पड़ी थी, जिससे बर्फ पिघलने लगी थी ।

कई बार हम इस बात अपनी भावी चुनौतियों को एक के दोषी होते हैं कि उजले नए अवसर का सूर्योदय मानने के बजाय उन्हें अपने जीवन का सूर्यास्त मान लेते हैं ।

मिसाल के तौर पर, जूते बेचने वाले दो सेल्समैनों की कहानी है, जिन्हें जूते बेचने के लिए एक टापू पर भेजा गया । पहला सेल्समैन जैसे ही वहाँ पहुँचा, उसे यह जानकर सदमा लगा कि वहाँ कोई जूते नहीं पहनता था । उसने तुरंत शिकागो के होम ऑफिस में एक टेलीग्राम भेजा, “कल घर लौट आऊँगा । यहाँ कोई भी जूते नहीं पहनता ।”

दूसरा सेल्समैन यहीं देखकर बहुत रोमांचित हो गया । तुरंत उसने शिकागो के होम ऑफिस में टेलीग्राम भेजा, “कृपया 10, 000 जूते भेज दें । यहाँ हर किसी को उनकी ज़रूरत है ।”

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 5 : हमारा नज़रिया समस्याओं को नियामतों में बदल सकता है

अवेक, मार्ई हार्ट में जे . सिडलो बैकस्टर ने लिखा था, “बाधा और अवसर में क्या फ़र्क़ है? उसके प्रति हमारा नज़रिया । हर अवसर में एक मुश्किल होती है और हर मुश्किल में एक अवसर होता है ।”

जब किसी मुश्किल स्थिति से सामना होता है, तो उत्कृष्ट नज़रिये वाला व्यक्ति सबसे बुरे रूप में भी उसका सर्वश्रेष्ठ लाभ उठा लेता है । जीवन की तुलना सान चढ़ाने वाले पत्थर से की जा सकती है । यह आपका चूरा बनाता है या आपको चमकाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस चीज़ के बने हैं ।

युवा लीडर्स के सम्मेलन में शिरकत करते वक्त मैंने यह कथन सुना : “किसी समाज ने कभी शांति के समय में मज़बूत इंसान विकसित नहीं किए हैं । विपत्ति उन लोगों के लिए संपत्ति है, जिनका नज़रिया बेहतरीन होता है । पतंग हवा के साथ नहीं, बल्कि उसके खिलाफ़ ऊपर उठती है । जब आलोचना की विपरीत हवा बहे, तो वैसे ही बन जाएँ । जैसी पतंग हवा के झोंके के सामने बन जाती है एक शक्ति, जो इसे ज्यादा ऊँचा उठाती है । जब तक कि पतंग पर

नीचे बँधे धागे का नियंत्रणकारी तनाव न हो, यह ऊपर नहीं उठ पाएगी । यह जीवन के बारे में भी उतना ही सच है । सकारात्मक नज़रिये से हासिल हुई नीचे दी गई सफलताओं पर गौर करें ।

जब किसी मुश्किल स्थिति से सामना होता है, तो उत्कृष्ट नज़रिये वाला व्यक्ति सबसे बुरे रूप में भी उसका सर्वश्रेष्ठ लाभ उठा लेता है ।

जब नेपालियन के सहपाठियों ने उसके साधारण परिवार और गरीबी के कारण उसका मखौल उड़ाया, तो उसने खुद को पूरी तरह अपनी पुस्तकों में झोंक दिया । बुद्धिमत्ता में अपने सहपाठियों से तेज़ी से ऊपर उठने के कारण वे उसका सम्मान करने लगे । जल्द ही उसे कक्षा का सबसे बुद्धिमान छात्र माना जाने लगा ।

बहुत कम लोग अब्राहम लिंकन को जानते थे, जब तक कि गृहयुद्ध के भारी बोझ ने उनके चरित्र को उजागर नहीं कर दिया ।

रॉबिन्सन क्रूसो उपन्यास जेल में लिखा गया था । जॉन बन्यन ने पिलग्रिम्स प्रोग्रेस बेडफोर्ड जेल में लिखी । सर वाल्टर राले ने द हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड तेरह साल की कैद के दौरान लिखी थी । लूथर ने वॉर्टबर्ग के महल में नज़रबंद रहते समय बाइबल का अनुवाद किया था । द डिवाइन कॉमेडी के लेखक दांते दस वर्ष तक निर्वासन में काम करते रहे, क्योंकि उन पर मृत्युदंड की तलवार लटक रही थी । बीथोवन ने जब अपनी सबसे महान रचनाएँ लिखीं, तब वे लगभग पूरी तरह बहरे थे और दुखों के बोझ तले दबे थे ।

जब ईश्वर किसी को शिक्षित करना चाहता है, तो वह उसे नियामतों की नहीं, बल्कि आवश्यकताओं की पाठशाला में भेजता है । जब संकट आते हैं, तो महान नेता उभरकर सामने आ जाते हैं । जो लोग सफलता हासिल करते हैं, उनके जीवन का अध्ययन करें । आप पाएँगे कि भयंकर मुश्किलों ने उन्हें बार-बार सामान्य से ऊपर उठने के लिए विवश किया । न सिर्फ वे जवाब खोज लेते हैं, बल्कि अपने भीतर एक ज़बर्दस्त शक्ति भी खोज लेते हैं । जब परिस्थितियाँ हावी होती नज़र आती हैं, तो दूरस्थ समुद्री कुएँ की तरह भीतर की यह शक्ति विस्फोट करके एक शक्तिशाली लहर में बदल जाती है । तब खिलाड़ी लेखक, राजनेता, वैज्ञानिक या व्यवसायी उभरकर सामने आता है । डेविड सारनॉफ ने कहा था, “क्रिस्तान में बहुत सुरक्षा है, मैं तो अवसर की तलाश में हूँ ।”

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 6 : हमारा नज़रिया हमें एक असाधारण सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है

एक असाधारण सकारात्मक दृष्टिकोण असाधारण लक्ष्य हासिल करने में हमारी मदद कर सकता है। मैंने बहुत गौर से देखा है कि सकारात्मक चिंतक और डर व चिंता से भरा इंसान कितनी अलग - अलग नीतियाँ अपनाते हैं और उन्हें कितने भिन्न परिणाम मिलते हैं। मिसाल के तौर पर, प्राचीन इज़राइल में जब गोलायथ यहूदियों के ख़िलाफ़ आया, तो सारे सैनिकों ने सोचा, वह इतना बड़ा है कि हम उसे कभी नहीं मार सकते। डेविड ने उसी दानव को देखकर सोचा, वह इतना बड़ा है कि मेरा निशाना नहीं छूक सकता।

मूड़ी बाइबल इंस्टीट्यूट के पूर्व प्रेसिडेंट जॉर्ज स्वीटिंग ने एक स्कॉटिश व्यक्ति के बारे में एक कहानी बताई है, जो बहुत मेहनती था और उम्मीद करता था कि उसके अधीन काम करने वाले लोग भी ऐसे ही हों। उसके कर्मचारी चुटकी लेते थे, “स्कॉटी, क्या तुम नहीं जानते कि रोम एक दिन में नहीं बना था?” “हाँ,” उसने जवाब दिया, “मैं यह बात जानता हूँ। लेकिन मैं उसका फ़ोरमैन नहीं था।”

जिन लोगों के नज़रिये जीवन के प्रति पूरी तरह से सकारात्मक होते हैं। उन्हें हमेशा समझा नहीं जाता। वे ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें कुछ “अ - सीम” कहते हैं। दूसरे शब्दों में, वे जीवन की सामान्य सीमाओं को स्वीकार नहीं करते हैं, जैसा कि अधिकतर लोग करते हैं। वे “स्वीकृत” को सिर्फ़ इसलिए स्वीकार करने को तैयार नहीं रहते हैं, क्योंकि दूसरे लोग इसे स्वीकार करते हैं। खुद को सीमित करने वाली परिस्थितियों पर उनकी प्रतिक्रिया शायद “ठीक है” के बजाय “क्यों?” की होगी। निश्चित रूप से, उनकी भी सीमाएँ होती हैं। उनकी योग्यताएँ इतनी प्रचुर नहीं होती हैं कि वे कभी असफल नहीं हो सकते। लेकिन पराजय स्वीकार करने से पहले वे अपनी पूरी क्षमता तथा अपने लक्ष्यों की पूरी संभावना की आखिरी हद तक जाने के लिए कृतसंकल्प होते हैं।

वे भौंरों जैसे होते हैं। एरोडायनैमिक्स के सिद्धांत के अनुसार, जैसा विंड टनल परीक्षणों के ज़रिये दर्शाया जाता है, भौंरे को उड़ने में असमर्थ होना चाहिए। पंखों की तुलना में इसके शरीर के आकार और वज़न की वजह से इसका उड़ना वैज्ञानिक रूप से असंभव है। बहरहाल, भौंरा वैज्ञानिक सिद्धांत से अनजान है, इसलिए वह इसके बावजूद हर दिन उड़ता है और शहद बनाता है।

जब नज़रिया सही हो, तो न सिर्फ भविष्य उजला दिखता है, बल्कि वर्तमान भी अधिक आनंददायक होता है। सकारात्मक व्यक्ति समझता है कि सफलता की यात्रा भी इसकी मंजिल जितनी ही आनंददायक है। जब 83 साल की उम्र में आर्किटेक्ट फ्रैंक लॉयड राइट से पूछा गया कि उनकी कौन सी कलाकृति उन्हें सर्वश्रेष्ठ लगती है, तो उन्होंने जवाब दिया, “मेरी अगली वाली।”

ओहायो में मेरा एक मित्र एक इंटरस्टेट ट्रॉकिंग कंपनी में अठारह पहियों वाला ट्रक चलाता था। वह हर सप्ताह सैकड़ों मील यात्रा करता था। एक बार मैंने उससे पूछा कि वह इसके बावजूद ज्यादा थका हुआ क्यों नहीं दिखता। उसने जवाब दिया, “यह सब नज़रिये की बात है। कुछ ड्राइवर सुबह काम पर जाते हैं, लेकिन मैं तो “देहात में घूमने जाता हूँ।” इस तरह का सकारात्मक दृष्टिकोण उसे जीवन में “धार” देता है।

नज़रिये संबंधी सिद्धांत # 7 : आप धार्मिक हैं, इसलिए आपका नज़रिया अपने आप अच्छा नहीं हो जाता

यह उल्लेखनीय है कि सातों घातक पाप – गर्व, लोभ, वासना, ईर्ष्या, क्रोध, पेटूपन और आलस – नज़रिये, अंतर्मन और उद्देश्यों के मसले हैं। अफ़सोस कि कई धार्मिक लोग अपने भीतर अंतर्मन की समस्याएँ ढोते रहते हैं। वे भटके हुए बेटे की नीतिकथा में बताए बड़े भाई जैसे होते हैं और सोचते हैं कि वे हर चीज़ सही करते हैं। जब छोटा भाई आवारापन की ज़िंदगी जीने के लिए घर छोड़कर चला जाता है, तो बड़ा भाई अपने पिता के साथ घर पर रहने का चुनाव करता है। वह मज़े उड़ाने में समय नहीं गँवाएगा! बहरहाल, जब छोटा भाई घर लौटा, तो बड़े भाई के कुछ ग़लत नज़रिये सतह पर आने लगे।

पहला था आत्म — आत्म-महत्व का भाव।। बड़ा भाई खेत में वह काम कर रहा था,, जो उसे करना चाहिए था, लेकिन जब घर पर पार्टी हुई, तो वह पगला गया – उसके पिता ने कभी उसे जश्न नहीं मनाने दिया था!

इसके बाद आत्म—करुणा का भाव आया। बड़े भाई ने कहा, “देखो तो सहो! इतने वर्षों से मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ और आपने कभी मेरे लिए पार्टी नहीं दी। लेकिन जिस बेटे ने आपका सारा पैसा बर्बाद किया था, उसके घर लौटने पर आप उसके लिए इतना बड़ा जश्न मना रहे हैं।”

अक्सर लोग भटके हुए बेटे की कहानी के सच्चे अर्थ को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। वे भूल जाते हैं कि दरअसल यहाँ एक नहीं, बल्कि दो भटके हुए बेटे हैं।

छोटा भाई शरीर के पापों का दोषी था, जबकि बड़ा भाई मन के पापों का दोषी था । उसकी समस्या उसका नज़रिया था। नीतिकथा के अंत में यह बड़ा भाई होता है – दूसरा भटका हुआ बेटा – जो पिता के घर के बाहर रहता है।

और यह इतना अच्छा सबक्ष है कि हम सभी को याद रखना चाहिए। बुरा नज़रिया हमें ऐसी जगहों पर ले जाएगा, जहाँ हम नहीं जाना चाहते। कई बार तो यह आपको पूरी तरह खेल के बाहर भी ले जा सकता है। दूसरी ओर, अच्छा नज़रिया आपको सर्वाधिक संभावना वाली जगह पर पहुँचा सकता है।

शायद आपको पक्का नहीं पता कि क्या आपका नज़रिया वहीं है, जहाँ इसे होना चाहिए। या शायद आप किसी ऐसे व्यक्ति का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसका नज़रिया उतना सकारात्मक नहीं है, जितना कि हो सकता है। आप इस समस्या को कैसे सुलझाएँ? इसके लिए सबसे पहले तो आपको यह जानने की ज़रूरत है कि इंसान का नज़रिया बनता कैसे है? यह अगले अध्याय का विषय है।

खंड 2

नज़रिये का निर्माण

3

किसी व्यक्ति के नज़रिये को कौन सी चीजें आकार देती हैं?

नज़रिये में बहुत कुछ जाता है – लेकिन उससे
कहीं अधिक बाहर आता है।

नज़रिये शून्य में आकार नहीं लेते हैं। लोग निश्चित गुणों के साथ पैदा होते हैं और ये उनके नज़रियों को प्रभावित करते हैं। लेकिन लोगों के जीवन और उनके नज़रियों के निर्माण में कई दूसरे घटक इससे भी ज्यादा बड़ी भूमिका निभाते हैं। हालाँकि ये घटक लगातार लोगों को प्रभावित करते हैं, लेकिन आम तौर पर ये जीवन की इन अवधियों में सबसे ज्यादा प्रभाव डालते हैं :

अवस्थाएँ	घटक
जन्म से पहले	निहित व्यक्तित्व/स्वभाव / स्वभाव
जन्म	परिवेश
1 - 6 साल	शाब्दिक अभिव्यक्ति वयस्क स्वीकृति/प्रशंसा
6 - 10 सा	आत्म-छवि नए अनुभवों का सामना
11 - 21 साल	साथी, शारीरिक हुलिया
21 - 61 साल	विवाह, परिवार, नौकरी, सफलता जीवन के तालमेल और आकलन



व्यक्तित्व - मैं कौन हूँ

सभी लोग अनुठे इंसान के रूप में पैदा होते हैं। दो बच्चों के माता-पिता - पिता एक हों, परिवेश समान हो और उन्हें समान प्रशिक्षण दिया जाए, लेकिन इसके बावजूद वे एक दूसरे से पूरी तरह अलग होते हैं। इन भिन्नताओं के कारण ही “जीवन इतना आनंददायक होता है, जिसका हम सभी आनंद लेते हैं। आगर हम सभी के व्यक्तित्व समान होते जो एक जैसे घरों की तरह समान दिखते, तो जीवन की हमारी यात्रा निश्चित रूप से नीरस होती।

आम तौर पर, निश्चित स्वभाव वाले लोग उस स्वभाव के अनुरूप विशिष्ट नज़रिये विकसित कर लेते हैं।

मुझे दो लोगों की कहानी पसंद है। वे मछली पकड़ने जाते हैं और अपनी पत्नियों के बारे में बात करने लगते हैं। एक ने कहा, “अगर सभी मर्द मेरे जैसे होते, तो वे सभी मेरी पत्नी से शादी-शुदा - शुदा रहना चाहते।” दूसरे आदमी ने तपाक से जवाब दिया, “अगर वे मेरे जैसे होते, तो उनमें से कोई भी उससे शादी-शुदा - शुदा नहीं रहना चाहता।”

व्यक्तित्व के हर प्रकार के साथ कुछ नज़रियों का समूह जुड़ा रहता है। आम तौर पर, निश्चित स्वभाव वाले लोग उस स्वभाव के अनुरूप विशिष्ट नज़रिये विकसित कर लेते हैं। कुछ वर्ष पहले लोकप्रिय “लेफ्ट बिहाइंड” उपन्यासों के सह - सह-लेखक टिम लाहे ने चार बुनियादी स्वभावों के बारे में भाषण दिया और लिखा था। अवलोकन के आधार पर मैंने गौर किया है कि जिस व्यक्ति को वे पित्तप्रकृति वाला व्यक्तित्व कहते हैं, वह अक्सर लगन और आक्रामकता के नज़रिये दिखाता है। आशावादी व्यक्तित्व वाला इंसान आम तौर पर सकारात्मक होता है और जीवन के उजले पक्ष को देखता है। अंतर्मुखी उदास व्यक्तित्व वाला इंसान समय - समय-समय पर नकारात्मक हो सकता है, जबकि शांतचित्त व्यक्तित्व वाले के यह कहने की संभावना होती है, “आसानी से आओ, आसानी से जाओ।” हर इंसान का व्यक्तित्व इन स्वभावों के मिश्रण से बना है और आम वर्गीकरण के अपवाद भी होते हैं। बहरहाल, हर स्वभाव आम तौर पर किसी न किस मार्ग का अनुसरण करता है, जिसे उस व्यक्ति के नज़रियों द्वारा पहचाना जा सकता है।

परिवेश – मेरे चारों ओर क्या है

मुझे यकीन है कि परिवेश हमारे नज़रिये के विकास में व्यक्तित्व या अन्य निहित गुणों से अधिक बड़ी भूमिका निभाता है। परिवार शुरू करने से पहले मेरी पत्नी मारिट और मैंने बच्चों को गोद लेने का निर्णय लिया। आम तौर पर जिस बच्चे को प्रेमपूर्ण आस्था से भरे घर में रहने का लाभ नहीं मिल पाता, हम उसे वैसे माहौल में रहने का अवसर देना चाहते थे। हालाँकि हमारे बच्चे शारीरिक रूप से हमारे समान न हों, लेकिन वे निश्चित रूप से उस माहौल द्वारा ढल गए हैं, जिसमें हमने उनकी परवरिश की है।

शुरूआती बचपन का परिवेश इंसान के विश्वास तंत्र' को बनाता है। बच्चे प्राथमिकताएँ, नज़रिये, रुचियाँ और दर्शन अपने परिवेश से ही चुनते हैं। सच्चाई यह है कि मेरे नज़रिये पर वही असर डालता है, जिसमें सचमुच विश्वास करता हूँ! बहरहाल, यह भी हो सकता है कि मुझे जिन चीज़ों में विश्वास हो, वे सच न हो... या वे स्वस्थ न हों। यह भी हो सकता है कि इससे दूसरों को चोट पहुँचे और मैं भी तबाह हो जाऊँ। बहरहाल, विश्वास चाहे सही हो या गलत, उससे नज़रिया बलवान होता है।

परिवेश हमारे विश्वास तंत्र पर सबसे पहले असर डालता है। इसलिए नज़रिये की बुनियाद उस परिवेश में पड़ती है, जिसमें हम पैदा हुए थे। परिवेश और भी अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है, जब हम यह अहसास करते हैं कि शुरूआती नज़रियों को बदलना सबसे मुश्किल होता है।

शाब्दिक अभिव्यक्ति - मैं क्या सुनता हूँ

आपने निश्चित रूप से यह पुरानी कहावत सुनी होगी “छड़ियाँ और पत्थर मेरी हड्डियाँ तोड़ सकते हैं, लेकिन शब्दों से मुझे कभी चोट नहीं पहुँचेगी। इस पर कभी यकीन न करें! वास्तव में जब धाव मिट जाते हैं और शारीरिक दर्द चला जाता है, तब भी आहत करने वाले शब्दों का अंदरूनी दर्द क्रायम रहता है।

बरसों पहले जब मैं एक चर्च का नेतृत्व कर रहा था, तो एक स्टाफ मीटिंग में मैंने पादरियों, सेक्रेटरीज़ और संरक्षकों से एक बात कही। मैंने उनसे कहा कि अगर बचपन में किसी के शब्दों से उन्हें गहरी चोट पहुँची हो और उन्हें वह अनुभव अब तक याद हो, तो वे अपना हाथ उठा दें। हैरानी की बात यह थी कि हर

व्यक्ति ने हाथ उठा दिया । एक पादरी ने बचपन का एक प्रसंग बताया, जब वह स्कूल में एक रीडिंग सर्कल में बैठा हुआ था । (क्या आपको याद है कि यह अनुभव कितना भयावह हुआ करता था?) जब उसके पढ़ने का समय आया, तो उसने फ़ोटोग्राफ़ी शब्द का ग़लत उच्चारण कर दिया । उसने इसे फ़ो-टोग-रा-फ़ी के बजाय फ़ोटो-ग्राफ़ी पढ़ दिया । टीचर ने उसकी ग़लती सुधारी और कक्षा के सभी विद्यार्थी हँसने लगे । उसे अब भी वह घटना याद थी... चालीस साल बाद भी । उस अनुभव का एक सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि उस पल के बाद उसमें शब्दों का सही उच्चारण करने की इच्छा बलवती हो गई । वे आज उत्कृष्ट वक्ता हैं, इसका एक कारण उनका यह संकल्प भी है ।

वयस्त स्वीकृति । प्रशंसा – मैं क्या महसूस करता हूँ

अक्सर लीडर्स से बात करते वक्त मैं उन्हें बताता हूँ कि वे जिनका नेतृत्व कर रहे हैं, उन्हें स्वीकार करना और उनकी प्रशंसा करना कितना महत्वपूर्ण है । सच्चाई यह है कि आप कितना जानते हैं, लोगों को इस बात की तब तक परवाह नहीं होती, जब तक कि वे यह न जानते हों कि आप उनकी कितनी परवाह करते हैं!

अपने स्कूली दिनों के बारे में सोचें । आपका प्रिय टीचर कौन था? अब सोचें कि क्यों । शायद आपकी सबसे प्रेमपूर्ण यादें उस टीचर की होंगी, जिसने आपको स्वीकार किया और आपकी प्रशंसा की । हमें शायद ही कभी यह याद रहता है कि उस टीचर ने हमसे क्या कहा था, , लेकिन हमें यह याद रहता है कि वह हमें कितना प्रेम करता था । सीखी हुई बातों को समझने से बहुत पहले ही हम इंसान को समझने की दिशा में बढ़ते हैं । सीखी हुई बातों को भूलने के बहुत बाद भी हमें स्वीकृति या अस्वीकृति की भावना याद रहती है ।

आप कितना जानते हैं, लोगों को इस बात की तब तक परवाह नहीं होती, जब तक कि वे यह न जानते हों कि आप उनकी कितनी परवाह करते हैं ।

कई बार मैंने लोगों से पूछा है कि क्या उन्हें पिछले सप्ताह उनके पादरी के प्रवचन में आनंद आया । उनके हाँ कहने के बाद मैं पूछता हूँ, “उनका विषय क्या था?” 75 प्रतिशत अवसरों पर वे मुझे प्रवचन का शीर्षक नहीं बता पाते हैं

। उन्हें सटीक विषय याद नहीं रहता, लेकिन उन्हें वह माहौल और नज़रिया याद रहता है, जिससे यह दिया गया था ।

बचपन के संडे स्कूल के मेरे प्रिय टीचर्स इस सत्य की सुंदर मिसाल हैं। सबसे पहले केटी, जो मेरी सेकंड ग्रेड टीचर थीं। जब मैं बीमार रहता था और उनकी क्लास में नहीं जाता था, तो वे सोमवार को मुझसे मिलने घर आ जाती थीं। वे मुझसे पूछती थीं कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ और फिर वे मुझे पाँच सेंट का कोई खिलौना देती थीं, जो मेरे लिए एक मिलियन डॉलर जितना मूल्यवान होता था। केटी कहती थीं, ‘जॉनी, जब तुम क्लास, में आते हो, तो मैं हमेशा ज्यादा अच्छी तरह पढ़ाती हूँ। जब तुम अगले रविवार की सुबह आओ, तो अपना हाथ उठा देना, ताकि मुझे पता चल जाए कि तुम आ गए हो? तब मैं अच्छा पढ़ाऊँगी।’ ”

मुझे अब भी याद है कि मैं अपना हाथ उठाता था और केटी सामने से मुझे देखकर मुस्कुराती थीं। मुझे यह भी याद है कि रविवार को केटी जब पढ़ाना शुरू करती थीं, तो कुछ दूसरे बच्चे भी अपना हाथ उठाते थे। उनकी क्लास में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या तेज़ी से बढ़ने लगी। उस साल संडे स्कूल के सुपरिंटेंट क्लास के दो सेक्शन करना चाहते थे। वे हॉल के पार एक नई क्लास शुरू करना चाहते थे। उन्होंने पूछा कि कौन - कौन विद्यार्थी नई क्लास में स्वेच्छा से पढ़ने जाना चाहते हैं, लेकिन किसी ने भी हाथ नहीं उठाया। क्यों? कोई बच्चा केटी के प्रेम के निरंतर प्रदर्शन को छोड़कर किसी नई टीचर से पढ़ने नहीं जाना चाहता था।

ग्लेन लेदरवुड एक और टीचर हैं, जो मुझे याद हैं। जहाँ मैं बड़ा हुआ था, वहाँ वे चर्च में जूनियर हाई स्कूल के सभी लड़कों को पढ़ाते थे। क्या आपने कभी दस - छटपटाहटें - प्रति - मिनट वाले लड़कों के समूह को पढ़ाया है? आम तौर पर ये टीचर्स उस कक्षा को पढ़ाने के बाद सीधे अपने स्वर्ग के पुरस्कार की ओर चले जाते थे! लेकिन ग्लेन नहीं। उन्होंने जूनियर हाई के लड़कों को तीस साल तक पढ़ाया। मैंने उनकी कक्षा में जो बारह महीने बिताए, उनका मेरी आस्था और जीवन के काम पर गहरा असर हुआ।

मुझे एक बहुत प्रशंसात्मक परिवार में बड़े होने का सौभाग्य भी मिला था। मैंने कभी अपने माता - पिता के प्रेम और स्वीकृति पर शक नहीं किया। उन्होंने अपने कार्यों और शब्दों से अपने प्रेम की बार - बार पुष्टि की। जब हमारे बच्चे बड़े हो रहे थे, तो मार्गरिट और मैंने उन्हें भी वैसा ही माहौल देने की कोशिश की। मेरा मानना है कि हमारे बच्चों ने हमारी स्वीकृति और प्रशंसा को दिन में

कम से कम तीस बार देखा या महसूस किया। आज मैं कहूँगा कि हमारे नाती - पोते इससे दोगुनी स्वीकृति और प्रशंसा पाते हैं। फिर भी यह ज़रूरत से ज़्यादा नहीं है। क्या आपको कभी ज़रूरत से ज़्यादा बार बताया गया है। कि आप महत्वपूर्ण हैं, कि आपसे प्यार किया जाता है और आपकी सराहना की जाती है? याद रखें, आप कितना जानते हैं, लोगों को इस बात की तब तक परवाह नहीं होती, जब तक कि वे यह न जानते हों कि आप उनकी कितनी परवाह करते हैं!

आत्म - छवि - मैं खुद को कैसे देखता हूँ

हम खुद को जिस तरह से देखते हैं, उससे भिन्न अंदाज़ में निरंतर प्रदर्शन करना असंभव होता है। दूसरे शब्दों में, हम आम तौर पर अपनी आत्म - छवि के अनुरूप कार्य करते हैं। अंदरूनी भावनाएँ बदले बिना बाहरी कार्य बदलने से ज़्यादा मुश्किल कुछ भी नहीं है।

उन अंदरूनी भावनाओं को बेहतर बनाने का एक श्रेष्ठ तरीका यह है कि कुछ “सफलताएँ” हासिल कर ली जाएँ। मेरी बेटी एलिज़ाबेथ संकोची प्रवृत्ति की है और वह नए अनुभवों को टालना चाहती है। लेकिन एक बार जब वह किसी स्थिति के बारे में ठान लेती है, तो वह “पूरी ताकत से आगे बढ़ जाती है। जब वह पहले ग्रेड में थी, तो उसके स्कूल में एक कैंडी बार सेल आयोजित हुई। हर बच्चे को तीस कैंडी बार दी गई और उन्हें उन सभी को बेचने की चुनौती दी गई। जब मैंने एलिज़ाबेथ को स्कूल से लिया, तो वह अपनी “चुनौती” को थामे हुए थी और उसे थोड़े सकारात्मक प्रोत्साहन की ज़रूरत थी। यह मेरी नई सेल्सगर्ल के साथ एक सेल्स मीटिंग करने का समय था।

घर लौटने तक पूरे रास्ते मैं उसे सिखाता रहा कि कैंडी बार कैसे बेची जा सकती हैं। मैंने हर सबक के साथ इस तरह के आधा दर्जन वाक्यांश कहे, “तुम यह काम कर सकती हो - तुम्हारी मुस्कान देखकर ही वे खरीद लेंगे - मुझे तुम पर भरोसा है। पंद्रह मिनट की कार यात्रा के अंत में मेरे बाल में बैठी छोटी लड़की एक आकर्षक, समर्पित सेल्सलेडी बन गई। कार से उतरते ही वह तुरंत पड़ोस के इलाके में चली गई। साथ मैं उसका छोटा भाई जोएल भी था, जो एक कैंडी बार खाते - खाते घोषणा कर रहा था कि उसने वाकई इससे अच्छी कैंडी बार ज़िंदगी में कभी नहीं खाई।

शाम तक सभी तीस बार बिक गई थीं और एलिज़ाबेथ बेहतरीन महसूस कर रही थी। मैं कभी वे शब्द नहीं भूल पाऊँगा, जो मैंने उस रात उसे बिस्तर पर सुलाते समय उसकी प्रार्थना में सुने थे : ‘ हे भगवान्, स्कूल में कैंडी सेल के लिए धन्यवाद । यह बेहतरीन है । हे भगवान्, विजेता बनने में मेरी मदद करें! आमीन । ”

एलिज़ाबेथ की प्रार्थना दरअसल हर व्यक्ति के दिल की इच्छा होती है। हम सभी विजेता बनना चाहते हैं। निश्चित रूप से, अगले दिन एलिज़ाबेथ कैंडी बार का एक और बॉक्स लेकर घर लौटी। अब ज्यादा कड़ा इम्तहान था! दोस्ताना पड़ोसियों को वह पहले ही अपनी कैंडी बार बेच चुकी थी, इसलिए अब वह अनजान ग्राहकों के क्रूर संसार में जाने के लिए विवश हो गई। जब हम अपना सामान बेचने के लिए एक शॉपिंग सेंटर में गए, एलिज़ाबेथ ने डर को स्वीकार किया। एक बार फिर, मैंने प्रोत्साहन के शब्द कहे, कुछ और बेचने के गुरु सिखाए अधिक प्रोत्साहन, सही जगह, अधिक प्रोत्साहन। और उसने यह काम कर दिया। कुल मिलाकर इस अनुभव में दो दिन की बिक्री थी, पूरा माल बेचने का प्रदर्शन था, दो खुश लोग थे और एक प्रेरित आत्म - छवि थी।

हम खुद को कैसा देखते हैं, यह दूसरों के हमें देखने का प्रतिबिंब होता है। अगर हम खुद को पसंद करते हैं, तो इससे यह संभावना बढ़ जाती है कि दूसरे भी हमें पसंद करेंगे। आत्म - छवि हमारे नज़रियों के निर्माण के पैमाने तय करती है। हम खुद को जैसा देखते हैं, उसी के अनुरूप काम करते हैं। हमने अपने दिल में जो सीमाएँ बना ली हैं, हम उनके पार कभी नहीं जा पाएँगे। “नए प्रदेश” केवल तभी खोजे जा सकते हैं, जब हमारी आत्म — छवि इतनी मज़बूत हो कि हमें वहाँ जाने की अनुमति दे।

नए अनुभवों से सामना - विकास के अवसर

फ्रांसीसी दार्शनिक फ्रांस्वाँ वॉल्टेर ने ज़िंदगी को ताश के पत्तों के खेल की संज्ञा दी थी। हर खिलाड़ी को जो पत्ते मिलते हैं, उसे उन्हें स्वीकार करना पड़ता है। लेकिन एक बार जब पत्ते हाथ में आ जाते हैं, तो वह अकेला ही तय करता है कि उस बाज़ी को जीतने के लिए उन पत्तों के साथ कैसे खेला जाए।

हमारे हाथ में हमेशा कई अवसर होते हैं और हमें यह निर्णय लेना होता है कि क्या हमें जोखिम लेना चाहिए और उन अवसरों पर काम करना चाहिए।

इससे जितना तनाव होता है, उतना जीवन में किसी दूसरी चीज़ से नहीं होता, लेकिन यह भी याद रखें कि नए अनुभवों से विकास के जितने अधिक अवसर मिलते हैं, उतने किसी दूसरी चीज़ से नहीं मिलते।

यदि आप अभिभावक हैं, तो किसी मोड़ पर आप पाएँगे कि आप नए अनुभवों से अपने बच्चों की रक्षा नहीं कर सकते, जिनके नकारात्मक होने की आशंका होती है है। इसलिए आत्म- छवि और विश्वास को बढ़ाने वाले सकारात्मक अनुभवों की तैयारी अनिवार्य है। ज़िंदगी के लिए बच्चों को तैयार करने में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के अनुभवों का इस्तेमाल औज़ारों के रूप में किया जा सकता है।

जब बच्चों के नए अनुभव सकारात्मक न हों, तो बच्चों को लगातार तसल्ली और प्रशंसा की ज़रूरत होती है। वास्तव में, अनुभव जितना ज्यादा बुरा हो, उन्हें उतने ही अधिक प्रोत्साहन की ज़रूरत होती है। लेकिन कई बार जब वे हताश होते हैं, तो हम भी हताश हो जाते हैं। अपनाने के लिए एक अच्छा फॉर्मूला यह है :

नए अनुभव + सिखाने के कार्य \times प्रेम = विकास।

साथियों के साथ संबंध – मुझे कौन प्रभावित करता है

हमारे बारे में दूसरों की अनुभूतियाँ इस बात पर असर डालती हैं कि हम खुद को कैसे देखते हैं। आम तौर पर हम दूसरों की अपेक्षाओं के अनुरूप प्रतिक्रिया करते हैं। यह सत्य अभिभावकों के सामने स्पष्ट हो जाता है, जब उनके बच्चे स्कूल जाते हैं। अब माता - पिता अपने बच्चों के परिवेश को नियंत्रित नहीं कर सकते।

मेरे माता - पिता समझते थे कि दूसरे लोगों का उनके बेटों के व्यवहार पर काफ़ी असर हो सकता है, इसलिए उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे हमारे साथियों पर अधिकाधिक नज़र रखेंगे और नियंत्रित करेंगे। उनकी रणनीति : मैक्सवेल निवास में ऐसा माहौल बनाओ, जो उनके दोनों लड़कों के मित्रों को रास आए। इसका मतलब था अपने पैसों और समय की कुर्बानी। उन्होंने हमारे लिए एक शफ़लबोर्ड गेम, पिंग - पॉना टेबल, पूल टेबल, पिनबॉल मशीन, केमिस्ट्री सेट, बास्केटबॉल कोर्ट और तमाम खेल सामग्री प्रदान की, जिसकी

कल्पना की जा सकती थी । यह सब खेलते वक्त माँ भी हमारे साथ रहती थीं, जो दर्शक, रेफरी, सलाहकार, मध्यस्थ और प्रशंसक की भूमिका निभाती थीं ।

और हमारे मित्र आते थे, अक्सर एक बार में बीस - पच्चीस की संख्या में । सभी आकार और रंगों के । हर कोई मज़े करता था और मेरे माता - पिता हमारे मित्रों को देखते थे । कई बार, उनके जाने के बाद मेरे माता - पिता हमारे किसी दोस्त के बारे में पूछते थे । वे खुलकर उसकी भाषा या नज़रियों पर बातचीत करते थे और हमें प्रोत्साहित करते थे कि हम उस तरह से काम न करें या न सोचें । मुझे अब अहसास होता है कि उस उम्र में मेरे अधिकतर बड़े निर्णय साथियों के अवलोकन के बाद मेरे माता-पिता की नसीहत से प्रभावित हुए थे ।

कैसी स्टेंगेल न्यूयॉर्क यांकीज़ बेसबॉल टीम के सफल मैनेजर थे और वे खिलाड़ी के नज़रिये पर साथियों के प्रभाव को बखूबी समझते थे । जब बिली मार्टिन रुकी मैनेजर थे, तो स्टेंगेल ने उन्हें इस बाबत सलाह दी थी । मार्टिन याद करते हैं, “कैसी ने कहा था कि आपकी टीम में पंद्रह खिलाड़ी ऐसे होंगे, जो आपके लिए दौड़कर दीवार तोड़ने को तैयार रहेंगे, पाँच आपसे नफरत करेंगे और पाँच इस बारे में अनिर्णय की स्थिति में होंगे । जब आप उन्हें कहीं कमरों में ठहराएँ, , तो हमेशा नकारात्मक लोगों को एक ही कमरे में रखें । कभी भी किसी अच्छे खिलाड़ी को नकारात्मक खिलाड़ी के साथ न ठहराएँ । एक साथ रखे जाने पर नकारात्मक खिलाड़ी हर चीज़ के लिए मैनेजर को दोष देंगे, लेकिन आगर आप उन्हें अलग - थलग रखते हैं, तो यह नज़रिया फैल नहीं पाएगा।”

लाइफ़ इंज़ ट्रिमेंडस के लेखक चार्ल्स “ट्रिमेंडस” जोन्स कहते हैं, ““आप पाँच साल बाद क्या बनेंगे, यह इस बात से तय होगा कि इस दौरान आप क्या पढ़ते हैं और किनके साथ रहते हैं ।” यह इतनी अच्छी बात है कि हम सभी को याद रखनी चाहिए ।

शारीरिक हुलिया - हम दूसरों को कैसे दिखते हैं

हमारा हुलिया हमारे नज़रिये के निर्माण में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । “फैशनेबल हुलिया” रखने के लिए लोगों पर अविश्वसनीय दबाव डाला जाता है, क्योंकि यह स्वीकृति का पैमाना नज़र आता है । अगली बार टेलीविज़न देखते समय गौर करें कि विज्ञापन हुलिए पर कितना ज्यादा ज़ोर देते हैं । कपड़ों, डाइट, व्यायाम और सकल शारीरिक आकर्षण संबंधी विज्ञापनों के प्रतिशत पर

गौर करें हॉलीवुड कहता है, “सामान्य का ज़माना लद गया है; आजकल तो सुंदरता फ़ैशन में है।” इससे हमारे मूल्य की अनुभूति प्रभावित होती है।

हमारे हुलिए के हिसाब से दूसरे भी हमारे मूल्य का आकलन करते हैं, इस अहसास से हमारी मुश्किलें और बढ़ जाती हैं। हाल में मैंने एक लेख पढ़ा। इसमें लिखा था, “ हमारा शारीरिक आकर्षण हमारी आमदनी तय करने में मदद करता है। ” मिसाल के तौर पर, इस लेख के लिए किए गए शोध का निष्कर्ष यह था कि 6 फुट 2 इंच के आदमियों और 5 फुट 10 इंच के आदमियों की तनख्बाहों में बहुत अंतर था। ज्यादा लंबे लोगों को हमेशा ज्यादा तनख्बाह मिलती थी। चाहे आपको यह पसंद हो या न हो, शारीरिक हुलिया (और इसकी अनुभूति) हर व्यक्ति के नज़रिये पर असर डालता है।

विवाह, परिवार और नौकरी – हमारी सुरक्षा और सामाजिक स्थिति

जब हम पच्चीस के क़रीब पहुँचते हैं, तो नए प्रभाव हमारे नज़रिये पर असर डालने लगते हैं। इस दौरान अधिकतर लोग कोई कैरियर शुरू करते हैं। वे अक्सर विवाह भी कर लेते हैं। इसका मतलब है कि अब एक और व्यक्ति हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।

जब मैं नज़रियों पर बोलता हूँ, तो मैं हमेशा इस बात पर ज़ोर देता हूँ : सकारात्मक लोगों के इर्द - गिर्द रहें। बहरहाल, मुझे एक बहुत दुख भरी टिप्पणी अक्सर सुनने को मिलती है। वह टिप्पणी यह है कि किसी व्यक्ति का जीवनसाथी नकारात्मक है और वह बदलना ही नहीं चाहता। कुछ हद तक, जब नकारात्मक जीवनसाथी बदलना नहीं चाहता है, तो सकारात्मक जीवनसाथी ऐसा महसूस करता है, जैसे वह नकारात्मकता की जेल में कैद हो गया है। ऐसे मामले में मैं दंपति को सलाह देता हूँ कि वे अपने जीवनसाथी को उस व्यक्ति के रूप में याद करें, जिससे उन्होंने प्रेमप्रसंग शुरू होते समय प्रेम किया था। अगर एक दूसरे की कमज़ोरियों पर ज़ोर न दिया जाए, तो उनका विवाह बेहतर हो जाएगा। लेकिन चूँकि शक्तियों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, इसलिए कई लोग अंततः तलाक का निर्णय ले लेते हैं। जीवनसाथी सर्वश्रेष्ठ की उम्मीद से सबसे बुरे की आशंका तक पहुँच जाते हैं और शक्तियों के बजाय कमज़ोरियों पर ध्यान केंद्रित करने लगते हैं।

मैंने जिन घटकों का ज़िक्र किया है, वे सभी नज़रिये के “मिश्रण” में योगदान देते हैं। उन्होंने इस बात पर असर डाला कि आप कौन हैं और उन पर भी, जिनका आप नेतृत्व करते हैं। लेकिन यह बात याद रखें : चाहे आपकी उम्र ग्यारह साल हो, बयालीस साल हो या पैसठ साल, जीवन के प्रति आपका नज़रिया अब भी निर्माण की प्रक्रिया में है। अपना नज़रिया बदलने के लिए कभी देर नहीं होती। और यह अगले अध्याय का विषय है।

क्या नज़रिया बदला जा सकता है?

अच्छा नज़रिया पाने की कुंजी है बदलने की इच्छुकता ।

हम अपने नज़रियों के या तो मालिक होते हैं या फिर शिकार । यह व्यक्तिगत चयन का मामला है । हम आज कौन हैं, वह उन चयनों का परिणाम है जो हमने कल किए�े । कल हम वह बनेंगे, जो हम आज चुनते हैं । परिवर्तन करने का मतलब है परिवर्तन करने का चयन करना ।

मुझे बताया गया है कि उत्तरी कनाडा में बस दो मौसम होते हैं: जाड़ा और जुलाई । जब दूरस्थ इलाकों की सड़कें पिघलने लगती हैं, तो वहाँ कीचड़ हो जाता है । दूरस्थ देहात में जाने वाले वाहन गहरी लीक छोड़ जाते हैं, जो ठंडे मौसम के लौटने पर जम जाती है । जाड़े के महीनों के दौरान दूरस्थ इलाकों में जाने वाले लोगों के लिए एक साइनबोर्ड लगा रहता है, “ ड्राइवर, कृपया आप जिस लीक पर अपनी गाड़ी चलाने जा रहे हैं, उसे सावधानी से चुनें, क्योंकि आप अगले बीस मील तक उसी लीक में रहेंगे । ”

कुछ लाग बीस मील की लीक वाली कार की तरह अपने वर्तमान नज़रियों में ही अटके महसूस करते हैं । बहरहाल, नज़रिया स्थायी नहीं होता । यदि आप अपने नज़रिये से खुश नहीं हैं, तो यह जान लें कि आप इसे बदल सकते हैं । आप जिसका नेतृत्व करते हैं, यदि उसका नज़रिया ख़राब है, तो आप बदलने में उसकी मदद कर सकते हैं - लेकिन तभी, जब वह सचमुच बदलना चाहे । कोई भी इस तरह का सकारात्मक व्यक्ति बन सकता है, जिसके लिए

जीवन आनंदमय है और हर दिन संभावनापूर्ण है, बशर्ते वह सचमुच इसकी इच्छा करे। यदि आप बेहतरीन नज़रिया पाना चाहते हैं, तो निम्न चयन करें :

चयन # 1 : अपने वर्तमान नज़रिये का आकलन करें

प्रक्रिया यह जानने से शुरू होती है कि आप कहाँ से शुरू कर रहे हैं। अपने वर्तमान नज़रिये का आकलन करने में थोड़ा समय लगेगा। यदि संभव हो, तो खुद को अपने नज़रिये से अलग करने की कोशिश करें। इस अभ्यास का लक्ष्य “बुरे आप” को देखना नहीं, बल्कि “बुरे नज़रिये” को देखना है, जो आपको अधिक पूर्ण व्यक्ति बनने से रोकता है। आप प्रमुख परिवर्तन तभी कर सकते हैं, जब आप समस्या को पहचान लें।

जब कोई पेशेवर विशेषज्ञ नदी का बहाव रोकने वाले लट्ठों के ढेर को देखता है, तो वह एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर सबसे प्रमुख लट्ठे का पता लगाता है, उस लट्ठे को हटा देता है और बाकी काम नदी का बहाव खुद कर देता है। दूसरी ओर, एक नौसिखिया ढेर के किनारे से शुरू करते हुए सारे लट्ठों को हिलाता है और अंत में सबसे प्रमुख लट्ठे को हिलाता है। ज़ाहिर है, दोनों ही तरीकों से लट्ठे हट जाते हैं, लेकिन पेशेवर विशेषज्ञ अपने काम को अधिक जल्दी और प्रभावी ढंग से कर लेता है।

अपने नज़रिये के प्रमुख “लट्ठों” का पता लगाने के लिए निम्न आकलन प्रक्रिया का इस्तेमाल करें (और अपने जवाब किसी जर्नल या किसी ऐसी जगह लिख लें, जहाँ आप बाद में उन्हें देख सकें) :

समस्यामूलक भावनाओं को पहचानें : किन नज़रियों की वजह से आप अपने बारे में सबसे अधिक नकारात्मक महसूस करते हैं? आम तौर पर, समस्या के स्पष्ट होने से पहले भावनाओं का आभास किया जा सकता है। समस्यामूलक व्यवहार को पहचानें: किन नज़रियों के कारण आपको दूसरों के साथ व्यवहार में सबसे ज्यादा समस्याएँ आती हैं?

समस्यामूलक सोच को पहचानें: इंसान अपने विचारों का महायोग है। “जैसा इंसान अपने भीतर सोचता है, वैसा ही वह होता है।” कौन से विचार आपके दिमाग पर हावी रहते हैं और उसे नियंत्रित करते हैं? हालाँकि यह नज़रिये की समस्याओं को सुधारने में शुरुआती क्रदम है, लेकिन समस्यामूलक सोच को पहचानना पहले के दोनों को पहचानने जितना आसान नहीं है।

सच्चाई को स्पष्ट करें: कैसे बदलना है, यह जानने के लिए आपको सच्चाई की रोशनी में अपनी भावनाओं की जाँच करने की ज़रूरत है। यदि आप धार्मिक हैं, तो धर्मग्रंथ का इस्तेमाल करें। उसके हिसाब से आपका नज़रिया कैसा होना चाहिए?

संकल्प लें: इस अवस्था में “मुझे बदलने के लिए क्या करना चाहिए?” बदलकर “मुझे बदलना ही है” हो जाता है। याद रखें बदलने का चयन एक निर्णय है, जिसे लेना ज़रूरी होता है और इसे सिफ़ आप ही ले सकते हैं।

अपने चयन पर अमल करने की योजना बनाएँ: अपने निर्णय पर तुरंत और बार - बार काम करें।

चयन # 2 : अहसास करें कि आस्था डर से अधिक शक्तिशाली है

किसी मुश्किल या संदिग्ध काम की सफलता की गारंटी एक ही चीज़ दे सकती है और वह है शुरुआत से ही यह आस्था कि आप इसे कर सकते हैं। दार्शनिक विलियम जेस्स ने कहा था, “मेरी पीढ़ी की सबसे बड़ी खोज यह है कि लोग अपना मानसिक नज़रिया बदलकर अपने जीवन को बदल सकते हैं।” परिवर्तन आपकी मानसिक अवस्था पर निर्भर करता है। विश्वास करें कि आप बदल सकते हैं। अपने मित्रों और सहकर्मियों से कहें कि वे हर अवसर पर आपको प्रोत्साहित करें। और यदि आप धार्मिक हैं, तो ईश्वर से मदद माँगें। वह आपकी समस्याएँ जानता है और उनसे उबरने में आपकी मदद करने के लिए इच्छुक तथा समर्थ है।

चयन # 3 : उद्देश्य को लिख लें

जब मैं लड़का था, मेरे पिता ने मेरे भाई और मेरे लिए एक बास्केटबॉल कोर्ट बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने एक सीमेंट ड्राइवर बनाया, गैरेज पर एक बैकबोर्ड लगाया और बास्केट लगाने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी किसी आपातकालीन काम से उन्हें कहीं जाना पड़ा। उन्होंने वादा किया कि वे लौटते ही बास्केट टाँग देंगे। मैंने सोचा, कोई समस्या नहीं। मेरे पास एक बिलकुल नई स्पैल्डिंग बॉल है और उसे उछालने के लिए सीमेंट का एक नया ड्राइवर भी

है। कुछ मिनट तक मैं बॉल को सीमेंट पर उछालता रहा। जल्द ही यह नीरस लगने लगा, इसलिए मैंने बॉल उठाई और उसे बैकबोर्ड की ओर फेंक दी - एक बार। मैंने बॉल को कोर्ट पर लुढ़कने दिया और उसे दोबारा तब तक नहीं उठाया, जब तक कि डैडी ने लौटकर बास्केट नहीं टाँग दी। क्यों? क्योंकि गोल के बिना बास्केटबॉल खेलने में कोई मज़ा नहीं है। लक्ष्य न हो, तो खुशी नहीं मिलती।

अपना नज़रिया बदलने में आनंद और दिशा दोनों ही के लिए आपके पास एक स्पष्ट लक्ष्य होना चाहिए। यह लक्ष्य यथासंभव अधिकाधिक स्पष्ट, लिखा हुआ और हस्ताक्षर सहित होना चाहिए, जिसके साथ एक समयसीमा भी जुड़ी होनी चाहिए। इस उद्देश्य - कथन को किसी ऐसी जगह रखें, जहाँ आप दिन में कई बार इसे देख सकें, ताकि आपको प्रेरणा मिलती रहे।

आगर आप हर दिन ये तीन चीज़ें करेंगे, तो लक्ष्य हासिल हो जाएगा :

1. विशिष्टता से लिखें कि आप हर दिन क्या हासिल करना चाहते हैं :

बाइबल गोलायथ के साथ डेविड की मुठभेड़ की कहानी है। यह आस्था की अच्छी मिसाल है और यह दर्शाती है कि अपर्याप्त लग रहे संसाधनों से अजेय दिखने वाली बाधाओं को कैसे पार किया जा सकता है। लेकिन जब मैंने पहली बार डेविड की जीवनी पढ़ना शुरू की, तो मैं एक चीज़ से चकरा गया उसने गोलायथ से मुक़ाबला करने जाते समय रास्ते में अपनी गुलेल के लिए पाँच पत्थर क्यों उठाए थे? मैंने इस पर जितना सोचा, मैं उतना ही ज्यादा चकराया। पाँच पत्थर क्यों? दानव तो एक ही था। पाँच पत्थर चुनने का मतलब यह था कि उसकी आस्था में कोई कमी थी। क्या वह यह सोच रहा था कि वह पहला क्या नज़रिया बदला जा सकता है? निशाना चूक जाएगा और उसके पास चार और मौके रहने चाहिए? कुछ समय बाद मैं 2सैम्युअल पढ़ रहा था और वहाँ मुझे अपने सवाल का जवाब मिल गया। गोलायथ के चार बेटे थे! तो इसका मतलब यह है कि कुल मिलाकर पाँच दानव थे। डेविड के हिसाब से उसने एक दानव के लिए एक ही पत्थर उठाया था! अपनी आस्था में विशिष्ट रहने से मेरा यही मतलब है।

वे कौन से दानव हैं, जिन्हें आपको मारना है, ताकि आपका नज़रिया वैसा बन जाए, जैसा आप इसे बनाना चाहते हैं? आपको किन संसाधनों की ज़रूरत होगी? अपनी समस्याओं को देखकर कुंठा से दोहरे न हो जाएँ। एक बार मैं एक ही दानव से मुक़ाबला करें। सैन्य रणनीतिज्ञ अपनी सेनाओं को एक बार मैं

एक मोर्चे पर लड़ना सिखाते हैं। यह तय करें कि इस वक्त आप किस नज़रिये से मुक़ाबला करना चाहते हैं। उसे लिख लें। जब आप सफलतापूर्वक युद्ध जीतना शुरू करें, तो उन्हें लिख लें। और अतीत की विजयों के बारे में पढ़ते रहें, क्योंकि इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा।

2 . आप हर दिन जो हासिल करना चाहते हैं, उसे एक प्रोत्साहक मित्र के सामने शब्दों में कहें।

विश्वास एक आंतरिक निश्चय है; मत बाहरी कार्य है। जब आप अपने इरादों को शब्दों में व्यक्त करते हैं, तो इससे आपको प्रोत्साहन भी मिलेगा और जवाबदेही भी। लोगों के किसी संघर्ष को सुलझाने का एक तरीका यह होता है कि वे अपने या किसी दूसरे के सामने इसे शब्दों में व्यक्त कर देते हैं। यह अभ्यास आपके वांछित नज़रियों तक पहुँचने के लिए भी बहुत ज़रूरी है।

मैं कई सफल सेल्समैनों को जानता हूँ, जो हर सुबह पचास बार और हर शाम को पचास बार ज़ोर - ज़ोर से यह वाक्य दोहराते हैं, “मैं इसे कर सकता हूँ।” लगातार सकारात्मक कथन बोलने से उनका खुद पर विश्वास बढ़ता है और इसकी बदौलत वे उस विश्वास के अनुरूप काम भी कर पाते हैं। अपनी शब्दावली बदलकर यह प्रक्रिया शुरू कर दें। यहाँ पर कुछ सुझाव हैं:

इन शब्दों को पूरी तरह से मिटा दें

- 1 . मैं नहीं कर सकता
- 2 . काश
- 3 . शंका
- 4 . मुझे नहीं लगता
- 5 . मेरे पास समय नहीं है।
- 6 . शायद
7. मुझे डर है
8. मैं यक़ीन नहीं करता
9. (कम करें) मैं
10. यह असंभव है।

इन शब्दों को अपनी शब्दावली का हिस्सा बनाएं

- 1 . मैं कर सकता हूँ
- 2 . मैं करूँगा
- 3 . सर्वश्रेष्ठ की उम्मीद
- 4 . मैं जानता हूँ
- 5 . मैं समय निकाल लूँगा
- 6 . पक्का
- 7 . मुझे विश्वास है
- 8 . मुझे यक़ीन है
- 9 . (बढ़ावा दें) आप
- 10 . सभी चीज़ें संभव हैं



3. हर दिन अपने लक्ष्य पर कार्य करें

समझदार और मूर्ख व्यक्ति के बीच का एक फ़र्क किसी जानकारी पर उसकी प्रतिक्रिया है : व्यक्ति जो समझदार सुनता है, उस पर काम करता है, जबकि मूर्ख व्यक्ति जानता तो है, लेकिन काम नहीं करता। बदलने के लिए आपको काम करना होगा। और यह करते समय किसी दूसरे के लिए भी कोई अच्छा काम कर दें। कोई भी चीज़ किसी इंसान के नज़रिये को इतना बेहतर नहीं बनाती जितना कि किसी ज़रूरतमंद इंसान की निःस्वार्थ सेवा।

चयन # 4 : बदलने की इच्छा रखें

बदलने की इच्छा आपके नज़रिये के परिवर्तन की सफलता को जितना तय करेगी, उतना कोई दूसरा चयन नहीं करेगा। जब सब कुछ असफल हो जाता है, तब भी सिर्फ़ इच्छा आपको सही दिशा में बनाए रख सकती है। कई लोग खुद को बेहतर बनाने के लिए अजेय दिखने वाली बाधाओं को पार कर चुके हैं, जब उन्हें यह अहसास हुआ कि परिवर्तन संभव है, बशर्ते वे इसे शिद्दत से चाहें। मैं इसका एक उदाहरण देना चाहूँगा।

एक दिन एक मेंढक उछलते हुए एक देहाती सड़क पर बने बहुत बड़े गड्ढे में पहुँच गया। कूदकर बाहर निकलने की उसकी सारी कोशिशें बेकार गईं। जल्द ही एक खरगोश गड्ढे में फ़ंसे मेंढक के पास आया और क्या नज़रिया बदला जा सकता है? उसने उसे बाहर निकालने का प्रयास किया। वह भी नाकाम हो गया। जंगल के कई जानवरों ने बेचारे मेंढक को बाहर निकालने के तीन- चार साहसिक प्रयास किए लेकिन आखिरकार उन्होंने कोशिश छोड़ दी। उन्होंने कहा, ‘हम अब लौटकर जाते हैं और तुम्हारे लिए कुछ भोजन ले आते हैं। ऐसा लगता है कि तुम कुछ समय तक यहीं रहने वाले हो।’ बहरहाल, जब वे भोजन लेने जा रहे थे, तभी कुछ समय बाद उन्होंने मेंढक के अपने पीछे फुटकने की आवाज़ सुनी। उन्हें इस पर यक़ीन नहीं हुआ। उन्होंने अचरज से कहा, “हमने तो सोचा था कि तुम बाहर नहीं निकल सकते!” मेंढक ने जवाब दिया, “ओह, मैं नहीं निकल सकता था। लेकिन देखो, एक बड़ा सा ट्रक बिलकुल मेरी ही ओर चला आ रहा था और मुझे निकलना ही पड़ा।”

परिवर्तन की चुनौती के प्रेम में पड़े और परिवर्तन की इच्छा को बढ़ाते हुए देखें।

जब हमें “जीवन के गङ्गों से बाहर निकलना ही होता है , तभी हम बदलते हैं । जब तक हमारे पास स्वीकार करने योग्य विकल्प होते हैं, हम नहीं बदलते । सच्चाई यह है कि अधिकतर लोग नए समाधानों के बजाय पुरानी समस्याओं के साथ ज्यादा आरामदेह होते हैं । वे जीवन के कायाकल्प की अपनी आवश्यकताओं पर ड्यूक ऑफ़ कैम्ब्रिज की तरह प्रतिक्रिया करते हैं , जिन्होंने एक बार कहा था , “ कोई भी परिवर्तन , किसी भी समय , किसी भी कारण से , खेद करने योग्य है । जो लोग मानते हैं कि कोई भी चीज़ पहली बार नहीं करनी चाहिए, वे कभी कुछ होते नहीं देख पाते ।

लोग बदल सकते हैं और यह सबसे बड़ी प्रेरणा है । इच्छा की चिंगारी को इस अकस्मात अहसास से सबसे ज्यादा बल मिलता है कि आपको वैसे ही बने रहने की ज़रूरत नहीं है । परिवर्तन की चुनौती के प्रेम में पड़ें और परिवर्तन की इच्छा को बढ़ाते हुए देखें । यही रॉटरडैम , हॉलैंड की 78 वर्षीय एलीडा हुसैन के साथ हुआ । वे पचास साल से सिगरेट पी रही थीं और पचास साल से ही इस लत को छोड़ने की कोशिश कर रही थीं । लेकिन वे असफल रहीं । फिर 79 साल के लियो जैनसन ने उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, मगर एक पेंच था । क्या नज़रिया बदला जा सकता है? जैनसन ने एलीडा से कहा कि वे शादी तब तक नहीं करेंगे, जब तक कि एलीडा सिगरेट न छोड़ दें । एलीडा कहती हैं, “ इच्छाशक्ति मेरी लत छुड़ाने के लिए कभी पर्याप्त नहीं थी । प्रेम ने यह काम कर दिया । ”

मेरा जीवन दूसरों को उनकी क्षमता तक पहुँचाने के लिए समर्पित है । मैं आपको मार्क ट्रेन की सलाह पर अमल करने का सुझाव देता हूँ , जिन्होंने कहा था, “ अपने मन को कभी - कभार बाहर ले जाएँ और इसके साथ नृत्य करें । यह बिलकुल गठरी जैसा हो रहा है । “ इसका मतलब यह है , ” “ इस लीक से बाहर निकलो ” I ” बहुत बार हम सोच के एक खास तरीके से संतुष्ट हो जाते हैं और उन सीमाओं को स्वीकार कर लेते हैं , जिन्हें स्वीकार करने की ज़रूरत ही नहीं होती । परिवर्तन को गले लगाएँ और यह आपको बदल देगा ।

चयन # 5: एक बार में एक दिन जिएँ

कोई भी इंसान युद्ध लड़ सकता है , बशर्ते यह एक दिन के लिए हो । जब आप और मैं दो भयंकर चीज़ों - बीते हुए कल और आने वाले कल - को जोड़ देते हैं, तभी हम काँपते हैं । आज के अनुभव लोगों को नहीं पगलाते हैं । यह तो बीते

हुए कल में हुई किसी चीज़ का पश्चाताप या कटुता है और आने वाले कल की कोई भयंकर घटना है, जिसे लेकर वे पगलाते हैं। इसलिए आइए, हम एक बार में एक दिन जिएँ - आज !

चयन # 6: आपके विचारों के पैटर्न बदले

हमारा ध्यान जिस चीज़ पर केंद्रित होता है, वही हमारे कार्यों को तय करती है। हम जहाँ हैं और जो हैं, अपने दिमाग़ में रहने वाले प्रबल विचारों के कारण हैं। आइए इस निष्कर्ष पर एक निगाह डालते हैं। यह हमारे विचार जीवन की शक्ति को रेखांकित करता है:

प्रमुख आधार—वाक्य : हम अपने विचारों को
नियंत्रित कर सकते हैं।

गौण आधार—वाक्य : हमारी भावनाएँ हमारे विचारों
से आती हैं।

निष्कर्ष : हम जैसे सोचते हैं, उसे बदलना
सीखकर हम अपनी भावनाओं
को नियंत्रित कर सकते हैं।

यह इतना ही सरल है। हमारी भावनाएँ हमारे विचारों से उत्पन्न होती हैं। इसलिए, हम अपने विचार के पैटर्न बदलकर अपनी भावनाओं को बदल सकते हैं।

हमारी खुशी हमारी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि हमारे विचार जीवन से तय होती है। अक्सर मैं लोगों को देखता हूँ, जिन्हें विश्वास होता है कि जब वे कोई निश्चित लक्ष्य हासिल कर लेंगे, तो उसके बाद सुखी रहेंगे। लेकिन जब वे लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं, तो कई बार उन्हें वह संतुष्टि नहीं मिलती है, जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। संतुलन क्रायम रखने का रहस्य? अपने दिमाग़ में अच्छे विचार भर लें। धर्मदूत पॉल ने सलाह दी थी, “जो भी चीज़ें सच्ची हैं, जो भी चीज़ें उदात्त हैं ... जो भी चीज़ें अच्छी हैं, यदि कोई सद्गुण है और कोई प्रशंसनीय चीज़ है – तो उन चीज़ों पर मनन करें।” वे समझते थे कि जिन चीज़ों पर हमारा ध्यान केंद्रित रहता है, वही हमारे कार्यों को तय करती हैं।

चयन # 7: अच्छी आदतें डालें

नज़रिया और कुछ नहीं, विचार की आदत है। चाहे वे अच्छी हों या बुरी, आदत डालने की प्रक्रिया समान रहती है। सफल होने की आदत डालना भी उतना ही आसान है। जितना कि असफल होने की आदत डालना। आदतें सहज प्रवृत्ति की तरह जन्मजात नहीं होतीं, वे सीखे गए कार्य या प्रतिक्रियाएँ होती हैं। वे अकारण उत्पन्न नहीं होती हैं; उनका कोई न कोई कारण होता है। एक बार जब किसी आदत के मूल कारण का पता चल जाता है, तो उसे स्वीकार या अस्वीकार करना आपकी शक्ति में होता है। अधिकतर लोग अपनी आदतों को खुद पर नियंत्रण करने की अनुमति देते देते हैं। अगर वे आदतें बुरी हों, तो उनके नज़रियों पर नकारात्मक असर डालती हैं।

नीचे दिए क्रदम बुरी आदतों को अच्छी आदत में बदलने में आपकी मदद करेंगे:

- क्रदम # 1 : अपनी बुरी आदतों की सूची बनाएँ।
- क्रदम # 2 : मूल कारण क्या था?
- क्रदम # 3: सहायक कारण कौन से थे?
- क्रदम # 4: बुरी आदत की जगह लेने वाली एक सकारात्मक आदत तय करें।
- क्रदम #5 : अच्छी आदत, उसके लाभों और परिणामों के बारे में सोचें।
- क्रदम # 6: इस आदत को डालने के लिए कार्य करें।
- क्रदम #7: इस आदत को बलवान करने के लिए इस पर प्रतिदिन काम करें।
- क्रदम # 8 : अपनी अच्छी आदत के एक लाभ पर गौर करके खुद को पुरस्कार दें।

चयन # 8: समय-समय पर सही नज़रिया रखने का चयन करें

एक बार जब आप अच्छा नज़रिया रखने का चयन करते हैं, तो काम अभी शुरू ही हुआ है। उसके बाद सही नज़रिया बढ़ाने और क्रायम रखने का लगातार

निर्णय लेना जीवन भर चलता है । यदि आपने सावधानी से गौर न किया या अच्छे नज़रिये विकसित करने पर ध्यान न दिया, तो यह याद रखें : नज़रियों में अपनी पुरानी स्थिति की ओर लौटने की प्रवृत्ति होती है ।

जब आप अपने नज़रिये को बेहतर बनाने पर काम करें या अपने नेतृत्व में काम करने वाले किसी व्यक्ति के नज़रिये को बेहतर बनाने में मदद करें, तो यह पहचान लें कि परिवर्तन की तीन अवस्थाएँ होती हैं, जिनसे किसी इंसान का सही नज़रिया गुज़रता है:

शुरुआती अवस्था : पहले कुछ दिन हमेशा सबसे मुश्किल होते हैं । पुरानी आदतों को छोड़ना कष्टकारी होता है । सही कार्य करने के लिए आपको लगातार मानसिक निगरानी करनी होगी ।

मध्यम अवस्था : जिस पल अच्छी आदतें जड़ें पकड़ने लगती हैं, विकल्प खुल जाते हैं, जो नई चुनौतियाँ लेकर आते हैं । इस अवस्था में नई आदतें पड़ेंगी, जो अच्छी या बुरी हो सकती हैं । अच्छी खबर यह है कि आप जितने अधिक सही चयन और आदतें डालते हैं, संभवतः दूसरी अच्छी आदतें भी उतनी ही पड़ेंगी ।

बाद की अवस्था: बाद की अवस्था में संतुष्टि ही शत्रु है । हम सभी किसी न किसी ऐसे व्यक्ति को (शायद खुद को) जानते होंगे, जो वजन कम तो कर लेता है, लेकिन दोबारा खाने-पीने की पुरानी आदतों का शिकार हो जाता है और उसका वजन दोबारा बढ़ जाता है । जब तक परिवर्तन पूरा न हो जाए, तब तक पूरी तरह सतर्क रहें । और इसके बाद भी सतर्क बने रहें और यह सुनिश्चित करें कि आप लौटकर पुरानी नकारात्मक आदतों में न पहुँच जाएं ।

आप इकलौते इंसान हैं, जो यह तय कर सकता है कि आप क्या सोचेंगे और आप कैसे काम करेंगे । और इसका मतलब है कि आप अपने नज़रिए को जैसा चाहे वैसा बना सकते हैं । मगर एक बात याद रखें । भले ही आप सफल हो जाएँ और सकारात्मक इंसान बन जाएँ, लेकिन इससे आप नकारात्मक अनुभवों से नहीं बच पाएँगे । सकारात्मक इंसान बाधाओं से कैसे जूझता है और उनके बावजूद कैसे उत्साही बना रहता है? इस सवाल का जवाब जानने के लिए आगला अध्याय पढ़ें ।

5

क्या बाधाएँ सचमुच नज़रिये को बेहतर बना सकती हैं?

असफलता के खिलाफ आपका सबसे बड़ा
युद्ध बाहर नहीं, अंदर होता है।

चित्रकार डेविड और टेड ऑरलैंड एक आर्ट टीचर के बारे में एक कहानी बताते हैं, जिन्होंने विद्यार्थियों के दो समूहों के लिए ग्रेडिंग सिस्टम का एक प्रयोग किया। यह असफलता के लाभों पर एक नीतिकथा है। जो हुआ, वह यह था :

सिरेमिक्स टीचर ने पहले दिन ही घोषणा कर दी कि वे अपनी कक्षा को दो समूहों में बाँट रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्टूडियो के दाईं ओर बैठने वाले विद्यार्थियों की ग्रेडिंग का आधार गुणवत्ता होगी, जबकि स्टूडियो के बाईं ओर बैठने वाले विद्यार्थियों की ग्रेडिंग उनकी बनाई कलाकृतियों की मात्रा के आधार पर होगी। इसका तरीका सरल था : क्लास के आखिरी दिन वे अपनी बाथरूम की वजन मशीन उठा लाएँगे और “मात्रा” वाले समूह की कलाकृतियों को तौल लेंगे पॉट्स का वजन पचास पाउंड होने पर “ए” मिलेगा, चालीस पाउंड पर “बी” और इसी तरह। बहरहाल, “गुणवत्ता” पर जिन विद्यार्थियों की ग्रेडिंग होने वाली थी, उन्हें केवल एक ही पॉट बनाना था - हालाँकि “ए” हासिल करने के लिए इसका आदर्श होना ज़रूरी था। अंततः जब ग्रेडिंग का समय आया, तो एक अजीब तथ्य सामने आया: सबसे ऊँची गुणवत्ता की सारी कलाकृतियाँ मात्रा की ग्रेडिंग वाले समूह ने बनाई थीं। ऐसा लगता है कि जब “मात्रा” वाला समूह एक के बाद एक लगातार कलाकृतियाँ बनाने में व्यस्त था - और अपनी ग़लतियों से सीख रहा था -

तब “गुणवत्ता” वाला समूह बैठकर आदर्श कलाकृति संबंधी अवधारणाएँ गढ़ रहा था और अंत में उसकी सारी कोशिशों का परिणाम बहुत सी हवा-हवाई अवधारणाएँ और मुर्दा मिट्टी का ढेर भर था।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके लक्ष्य कला के क्षेत्र में हैं या कारोबार, चर्च, खेल या संबंधों में। एक ही तरीका है, जिससे आप आगे निकल सकते हैं और वह है जल्दी असफल होना, बार-बार असफल होना और असफल होते-होते-आगे पहुँचना।

यात्रा कर लें

मैं असंख्य सम्मेलनों में हर साल हजारों लोगों को नेतृत्व के बारे में सिखाता हूँ। और मेरी एक बहुत बड़ी चिंता यह होती है कि कुछ लोग कार्यक्रम के बाद घर लौट जाएँगे और अपने जीवन में कोई परिवर्तन नहीं करेंगे। वे “शो” का आनंद तो लेंगे, लेकिन उसमें बताए गए किसी भी विचार पर अमल नहीं करेंगे। मैं लोगों से बार—बार कहता हूँ : हम घटना का अति आकलन करते हैं और प्रक्रिया का न्यून न्यून—आकलन करते हैं। जिसने भी सपने को साकार किया है, वह सपना किसी प्रक्रिया के प्रति समर्पण के कारण साकार हुआ। (यह भी एक कारण है कि मैं पुस्तकें लिखता हूँ और ऑडियो प्रोग्राम तैयार करता हूँ – ताकि लोग विकास की सतत प्रक्रिया में संलग्न हो सकें।)

लोगों में स्वाभाविक रूप से निष्क्रियता का रुझान होता है। इसीलिए स्व-सुधार में इतना अधिक संघर्ष करना पड़ता है। और यह भी एक कारण है कि विपत्ति हर सफलता के हृदय में निहित होती है। उपलब्धि की प्रक्रिया में बारंबार की असफलताओं से उबरने और अधिक ऊँचे स्तर तक पहुँचने का सतत संघर्ष शामिल होता है।

अपने सपने साकार करने के लिए आपको विपत्ति को गले
लगाना चाहिए और असफलता को अपने जीवन का नियमित
हिस्सा बनाना चाहिए। अगर आप असफल नहीं हो रहे हैं, तो
इसका मतलब है कि शायद आप आगे नहीं बढ़ रहे हैं।

जब असफलता का सामना करने की बात आती है, तो अधिकतर लोग न चाहते हुए भी मानेंगे कि सफल होने के लिए किसी व्यक्ति को थोड़ी विपत्तियों से होकर गुज़रना होता है। वे स्वीकार करेंगे कि प्रगति करने के लिए आपको कभी-कभार झटके का अनुभव करना होता है। लेकिन मैं मानता हूँ कि सफलता तभी मिलती है, जब आप उस विचार को एक कदम और आगे ले जाते हैं। अपने सपने साकार करने के लिए आपको विपत्ति को गले लगाना चाहिए और असफलता को अपने जीवन का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए। अगर आप असफल नहीं हो रहे हैं, तो शायद आप सचमुच आगे नहीं बढ़ रहे हैं।

विपत्ति के लाभ

मनोवैज्ञानिक डॉ. जॉइस ब्रदर्स कहते हैं, “‘सफलता में रुचि रखने वाले इंसान को असफलता को शिखर पर पहुँचने की प्रक्रिया के स्वस्थ, अवश्यंभावी हिस्से के रूप में देखना सीखना होता है।’” विपत्ति और इसकी वजह से मिलने वाली असफलता को सफलता की प्रक्रिया के रूप में देखने की सिर्फ उम्मीद ही नहीं करनी चाहिए; उन्हें तो इसके एक बेहद अनिवार्य हिस्से के रूप में देखना चाहिए। वास्तव में, विपत्ति के बहुतेरे लाभ हैं। विपत्ति को गले लगाने और इसके सामने डटे रहने के कुछ प्रमुखकारणों पर नज़र डालते हैं:

1. विपत्ति से लचीलापन उत्पन्न होता है

जीवन में दूसरी कोई चीज़ उतना लचीला नहीं बनाती है, जितना विपत्ति और असफलता बनाती हैं। 1980 के दशक के मध्य में टाइम मैग्जीन ने एक अध्ययन किया। इसमें उन लोगों के समूह के अविश्वसनीय लचीलेपन का वर्णन लिया, जिन्होंने कारखाने बंद होने के कारण तीन बार नौकरियाँ खोई थीं। मनोवैज्ञानिक उम्मीद कर रहे थे कि वे हताश होंगे, लेकिन वे आश्वर्यजनक रूप से आशावादी थे। उनकी विपत्ति से दरअसल उन्हें लाभ मिला था। चूँकि वे पहले भी एक नौकरी खो चुके थे और कम से कम दो बार एक नई नौकरी खोज चुके थे, इसलिए वे विपत्ति को झेलने में उन लोगों के मुकाबले अधिक सक्षम थे, जिन्होंने केवल एक ही कंपनी में नौकरी की थी और अचानक खुद को बेरोज़गार पाया था।

2. विपत्ति से परिपक्वता आती है

विपत्ति आपको बेहतर बना सकती है, बशर्ते आप इसकी वजह से कटु न बन जाएँ। क्योंकि इससे बुद्धिमत्ता और परिपक्वता बढ़ती हैं। अमेरिकी उपन्यासकार विलियम सैरोयान ने कहा था, “अच्छे लोग अच्छे इसलिए हैं, क्योंकि असफलता के ज़रिये वे बुद्धिमत्ता तक पहुँचे हैं। देखिए, सफलता से बहुत कम बुद्धिमानी मिलती है।”

जब संसार अधिक तेज़ गति से बदलता जा रहा है, तो लचीलेपन के साथ परिपक्वता ज्यादा महत्वपूर्ण होती जा रही है। ये गुण मुश्किलों का सामना करने से उत्पन्न होते हैं। हारवर्ड बिज़नेस स्कूल के प्रोफेसर जॉन कॉटर कहते हैं, मैं कल्पना कर सकता हूँ कि 20 साल पहले एकज़ीक्यूटिव्ज़ का एक समूह किसी उम्मीदवार को शिखर की नौकरी देने के संबंध में चर्चा करते समय कह रहा हो, “32 साल की उम्र में यह आदमी बहुत बुरी तरह असफल हुआ था। हर कोई यही कहेगा, ‘हाँ, यह बुरा लक्षण है।’ मैं कल्पना कर सकता हूँ कि आज किसी उम्मीदवार पर विचार करने वाला वही समूह यह कहेगा, ‘मुझे तो इस आदमी के बारे में इस बात से चिंता होती है कि वह कभी असफल नहीं हुआ।’” जिन समस्याओं का हम सामना करके उनसे उबर जाते हैं, वे हमें भावी मुश्किलों के लिए तैयार करती हैं।

3. विपत्ति प्रदर्शन को आगे बढ़ाती है

लॉयड ऑगिल्वी कहते हैं कि उनका एक मित्र अपनी युवावस्था में सर्कस में काम करता था। उसने सर्कस में काम करना सीखने के अपने अनुभव का वर्णन इस तरह किया था :

एक बार जब आप जान जाते हैं कि नीचे की जाली आपको झेल लेगी, तो आप गिरने की चिंता नहीं पालते हैं। आप दरअसल सफलतापूर्वक गिरना सीखते हैं! इसका मतलब यह है कि आप गिरने के बजाय अपनी ओर झूलते डंडों को पकड़ने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, क्योंकि अतीत में बार-बार गिरने से आपको विश्वास हो चुका है कि जब आप गिरते हैं, तो जाली मजबूत और लचीली होती है... गिरने और जाली द्वारा पकड़े जाने का परिणाम आपको सर्कस में एक क्या बाधाएँ सचमुच नज़रिये को बेहतर बना सकती है? रहस्यमय

आत्मविश्वास और साहस देता है। आप कम गिरते हैं। हर बार गिरने के बाद आप ज्यादा जोखिम लेने में समर्थ होते हैं।

जब तक कि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत अनुभव से यह नहीं सीख लेता कि वह विपत्ति के बावजूद जी सकता है, तब तक वह इस बात का अनिच्छुक रहता है कि दकियानूसी परंपरा का विरोध करे, संगठनात्मक प्रदर्शन को आगे धकेले या खुद को अपनी शारीरिक सीमाओं पर दबाव डालने की चुनौती दे। असफलता लोगों को यथास्थिति के बारे में दोबारा सोचने के लिए प्रेरित करती है।

4. विपत्ति अधिक बड़े अवसर प्रदान करती है

मैं मानता हूँ कि यदि समस्याएँ न हों, तो हमारी क्षमता सीमित हो जाएगी। मैं जिस भी सफल उद्यमी से मिला हूँ, उनमें से लगभग हर एक के पास विपत्ति और संकटों की असंख्य कहानियाँ थीं, जिन्होंने अधिक बड़े अवसर के द्वारा खोल दिए। मिसाल के तौर पर, नेवार्क, न्यू जर्सी में एक गारीब रुसी कैबिनेटमेकर के बेटे बर्नी मार्क्स का प्रसंग देखें। 1978 में उन्हें हार्डवेयर रिटेलर हैंडी डैन ने नौकरी से निकाल दिया। इस घटना से मार्क्स को आर्थर ब्लैंक के साथ मिलकर अपना खुद का कारोबार शुरू करने की प्रेरणा मिली। 1979 में उन्होंने अटलांटा जॉर्जिया में अपना पहला स्टोर खोला। उन्होंने इसका नाम होम डिपो रखा। आज, होम डिपो के 760 से अधिक स्टोर्स हैं, जहाँ 1,57,000 से अधिक लोग काम करते हैं : उन्होंने अपना कारोबार विदेशों तक फैला लिया है और हर साल वे 30 अरब डॉलर से अधिक की बिक्री करते हैं।

मुझे यकीन है कि बर्नी मार्क्स हैंडी डैन की नौकरी छूटने पर बहुत खुश नहीं हुए होंगे। लेकिन अगर उनकी नौकरी नहीं छूटती, तो क्या वे उस सफलता को हासिल कर सकते थे, जो उन्हें आज मिली है?

5. विपत्ति नवाचार को प्रेरित करती है

एक लड़के का परिवार स्वीडन से इलिनॉय आकर रहने लगा था। बीसवीं सदी की शुरुआत में उस लड़के ने फोटोग्राफी की एक पुस्तक मँगाने के लिए एक प्रकाशक क्या बाधाएँ सचमुच नज़रिये को बेहतर बना सकती हैं? को पच्चीस सेंट भेजे। प्रकाशक ने उसे पुस्तक तो भेज दी, लेकिन वह फोटोग्राफी के बजाय

आवाज़ की बाजीगरी पर थी। उस लड़के ने क्या किया? उसने परिस्थिति के साथ समझौता कर लिया और आवाज की बाजीगरी सीख ली। आगे चलकर उसका नाम एडगर बर्गेन के रूप में मशहूर हुआ और चालीस साल से अधिक समय तक उन्होंने चार्ली मैककार्थी नाम के कठपुतले से श्रोताओं का मनोरंजन किया।

नवाचार करने की योग्यता सृजनात्मकता के केंद्र में है – जो सफलता का एक अत्यावश्यक घटक है। हाउस्टन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जैक मैटसन इस तथ्य को पहचानते थे और उन्होंने एक पाठ्यक्रम विकसित किया, जिसे उनके विद्यार्थी “असफलता 101” कहते थे। इसमें मैटसन विद्यार्थियों से ऐसे नकली प्रॉडक्ट बनवाते हैं, जिन्हें कोई भी कभी नहीं ख़रीदेगा। उनका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी असफलता को पराजय के बजाय नवाचार से जोड़कर देखना सीख लें। उस तरह वे नई चीज़ें आज़माने के लिए स्वतंत्र हो जाएँगे। मैटसन कहते हैं, “वे दोबारा उठना सीखते हैं और दोबारा निशाना लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं।” अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो आपको अपनी कार्यविधि में हेरफेर करना सीखना होता है और दोबारा कोशिश करनी होती है। विपत्ति इस योग्यता को विकसित करने में मदद करती है।

6. विपत्ति अप्रत्याशित लाभ लाती है

आम आदमी एक ग़लती करता है और उसे असफलता मानने लगता है। लेकिन सफलता की सबसे बड़ी कुछ कहानियाँ ग़लतियों के अप्रत्याशित लाभ का परिणाम रही हैं। मिसाल के तौर पर, अधिकतर लोग एडिसन और फोनोग्राफ़ की कहानी से परिचित होंगे : उन्होंने इसकी खोज तब की, जब वे किसी बिलकुल ही अलग चीज़ का आविष्कार करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन क्या आप यह भी जानते हैं कि केलॉस का कॉर्नफ़्लेक्स तब बना, जब उबले गेहूँ को बेकिंग पैन में रात भर के लिए छोड़ दिया गया? या आइवरी साबुन इसलिए तैरता है, क्योंकि एक बैच को मिक्सर में बहुत ज्यादा देर तक छोड़ दिया गया था, जिस बजह से उसमें बहुत ज्यादा हवा चली गई थी? या स्कॉट टॉवेल्स तब बने, जब टॉयलेट पेपर मशीन बहुत सारी टिशू परतों को इकट्ठी करने लगी?

“विज्ञान में, ग़लतियाँ हमेशा सत्य से पहले आती हैं।” – होरेस वॉलपोल

होरेस वॉलपोल ने कहा था कि “विज्ञान में, ग़लतियाँ हमेशा सत्य से पहले आती हैं।” यही जर्मन - स्विस केमिस्ट क्रिश्चियन फ्रेडरिक स्कोन्बीन के साथ हुआ। एक दिन वे किचन में सल्फ्यूरिक व नाइट्रिक एसिड से प्रयोग कर रहे थे - जिसके लिए उनकी पत्नी ने उन पर कड़ा प्रतिबंध लगा रखा था। जब संयोग से कुछ मिश्रण किचन टेबल पर छलक गया, तो वे समझ गए कि अब संकट आने वाला है। (जानते थे कि जब उनकी पत्नी को इस बात का पता चलेगा, तो वे “विपत्ति” का अनुभव करेंगे!) उन्होंने जल्दी से एक कॉटन एप्रन उठाई, उस द्रव को साफ़ किया और एप्रन को आग के पास सूखने के लिए टाँग दिया।

अचानक एक जोरदार विस्फोट हुआ। स्पष्ट रूप से, कॉटन का सेल्युलोज “नाइट्रेशन” की प्रक्रिया से गुज़रा था। अनजाने में ही स्कोन्बीन ने नाइट्रेसेल्युलोज का आविष्कार कर दिया - जिसे बाद में स्मोकलेस गनपाउडर या गन - कॉटन कहा गया। वे अपने आविष्कार को बेचने लगे, जिससे उन्हें बहुत पैसा मिला।

7. विपत्ति प्रेरित करती है

बरसों पहले जब बियर ब्राएंट अलाबामा यूनिवर्सिटी की फुटबॉल टीम के कोच थे, तब क्रिमसन टाइड एक मैच में सिर्फ़ छह पॉइंट से आगे थी, जबकि चौथे क्वार्टर में दो मिनट से भी कम समय बचा था। ब्राएंट ने अपने क्वार्टरबैक को मैच में सुरक्षात्मक खेलने के निर्देश देकर भेजा, ताकि समय खत्म हो जाए।

टीम के गोले में क्वार्टरबैक ने कहा, “कोच कहते हैं कि सुरक्षात्मक खेलो, लेकिन विरोधी टीम हमसे इसी की उम्मीद कर रही है। चलो, हम आक्रमण करके उन्हें हैरान कर देते हैं।” और इसके साथ ही उसने एक पास प्ले शुरू कर दिया।

जब क्वार्टरबैक ने पास दिया, तो दूसरी टीम के रक्षक कॉर्नरबैक, जो चैंपियन धावक था, ने गेंद बीच में ही पकड़ ली और टचडाउन की उम्मीद से आगे बढ़ा। जिस क्वार्टरबैक से गेंद छिनी थी, उसे अच्छा धावक नहीं माना जाता था, लेकिन वह कॉर्नरबैक के पीछे लपका और उसका पीछा करके पाँच गज की लाइन पर उससे गेंद छीन ली। इससे मैच बच गया।

जब समय खत्म हुआ, तो विरोधी कोच बियर ब्राएंट के पास आकर बोले , “ तुमने तो कहा था कि तुम्हारा क्वार्टरबैक अच्छा धावक नहीं है? उसने मेरे सबसे तेज़ धावक को पीछे से दौड़कर पकड़ लिया !”

ब्राएंट ने प्रतिक्रिया की, “तुम्हारा खिलाड़ी छह पॉइंट्स के लिए दौड़ रहा था। मेरा खिलाड़ी अपनी जान बचाने के लिए दौड़ रहा था।”

विपत्ति किसी इंसान को जितना प्रेरित कर सकती है , उतना कोई दूसरी चीज़ नहीं कर सकती। ऑलंपिक डाइवर पैट मैक्रॉर्मिक ने कहा था , “मैं सोचता हूँ कि असफलता सबसे बड़े प्रेरकों में से एक है। 1948 के ट्रायल्स में मेरे बहुत ज़रा से अंतर से हारने के बाद ही मुझे समझ आया कि मैं सचमुच अच्छा कैसे बन सकता हूँ। यह वह पराजय थी, जिसने मेरी मुझे अपने प्रशिक्षण और लक्ष्यों पर एकाग्र तथा केंद्रित कर दिया ।” मैक्रॉर्मिक ने उस साल लंदन ऑलंपिक्स में दो स्वर्ण पदक जीते और चार साल बाद हेलसिंकी में दो और जीते।

आप जीवन में जिन नकारात्मक परिस्थितियों का सामना करते हैं, यदि आप उनसे पीछे हट सकें, तो आप पाएँगे कि नकारात्मक अनुभवों के सकारात्मक लाभ मिलते हैं। यह लगभग हमेशा सच होता है; आपके मन में तो बस उनकी तलाश करने की इच्छा होनी चाहिए। जिस विपत्ति का आप अनुभव कर रहे हैं, उसे ज्यादा व्यक्तिगत न मानें और दिल पर न लें।

यानी अगर आपकी नौकरी चली जाए, तो उस लचीलेपन के बारे में सोचें, जिसे आप विकसित कर रहे हैं। यदि आप किसी साहसिक चीज़ की कोशिश करने के बावजूद बच जाते हैं, तो इस बारे में सोचें कि आपने अपने बारे में क्या सीखा - और इससे आपको किस तरह नई चुनौतियाँ लेने में मदद मिलेगी। यदि कोई रेस्तराँ आपके ऑर्डर को ग़लत कर देता है, तो पता लगाएँ कि क्या यह कोई नई योग्यता सीखने का अवसर है। और यदि करियर में आपके साथ कोई दुर्घटना हो जाती है, तो सोचें कि इससे आपमें कितनी परिपक्वता विकसित हो रही है। इसके अलावा, बिल वॉन कहते हैं, “जीवन के खेल में कुछ शुरुआती नुकसान होना अच्छी बात है, क्योंकि इससे आपको एक अजेय सीज़न कायम रखने के दबाव से राहत मिलती है।” हमेशा बाधा के आकार की तुलना अपने सपने के आकार से करें, जिसे साकार करने की आप कोशिश कर रहे हैं। सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे देखते हैं। अगर आप इसे आज़माते हैं, तो हर बुरे अनुभव में अच्छाई खोज सकते हैं।

इससे बुरा क्या हो सकता था?

विपत्ति से उबरने और सफलता हासिल करने की एक बहुत अविश्वसनीय कहानी प्राचीन यहूदियों के जोसफ की थी। आप शायद इस कहानी से परिचित होंगे। उनका जन्म एक अमीर मध्य पूर्वी परिवार में हुआ था, जिसका पेशा मवेशी पालना था। वे बारह बच्चों में से ग्यारहवें थे। किशोरावस्था में जोसफ ने अपने भाइयों को खुद से दूर कर दिया। पहले तो वे अपने पिता के लाड़ले थे, हालाँकि वे नीचे से दूसरे नंबर की संतान थे। दूसरे, जब उनके भाई भेड़ों की सही देखभाल नहीं करते थे, तो वे यह बात पिताजी को बता देते थे। और तीसरे, उन्होंने अपने बड़े भाइयों को यह बताने की ग़लती कर दी थी कि एक दिन वे उन सबसे आगे पहुँचेंगे तथा उन्हें नियंत्रित करेंगे। पहले तो भाइयों का एक समूह उनकी जान लेना चाहता था, लेकिन सबसे बड़े भाई रूबेन ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। एक दिन जब रूबेन आस - पास नहीं था, तो बाकी भाइयों ने जोसफ को दास के रूप में बेच दिया।

जोसफ अंततः मिस्त्र पहुँचकर रक्षकों के कप्तान के घर में काम करने लगे, जिसका नाम पोटिफर था। अपनी नेतृत्व क्षमता और प्रशासकीय योग्यता की बदौलत जोसफ ने तेज़ी से तरक्की की और कुछ ही समय में पूरे घर को चलाने लगे। वे बुरी स्थिति को सर्वश्रेष्ठ बना रहे थे। लेकिन फिर हालात बिगड़ गए। उनके मालिक की पत्नी ने उन्हें अपने साथ सोने के लिए फुसलाया। जब जोसफ ने इससे इंकार कर दिया, तो उसने जोसफ पर डोरे डालने का झूठा इल्ज़ाम लगा दिया और पॉटिफर से कहकर जोसफ को जेल में डलवा दिया।

दासता से क़द तक

उस मोड़ पर जोसफ उतनी मुश्किल स्थिति में थे, जितनी मुश्किल में कोई इंसान हो सकता था। वे अपने परिवार से अलग थे। वे घर से दूर एक विदेशी धरती पर रह रहे थे। वे एक दास थे। और वे कैद में थे। लेकिन एक बार फिर, उन्होंने इस मुश्किल स्थिति का सर्वश्रेष्ठ लाभ उठाया। जल्दी ही जेल के वार्डन ने जोसफ को सारे कैदियों और जेल की समस्त दैनिक गतिविधियों का प्रभारी बना दिया।

जेल में जोसफ को एक साथी कैदी से मिलने का अवसर मिला, जो फराओ के दरबार में एक अधिकारी था। और जोसफ ने उस अधिकारी के एक

सपने की व्याख्या करके उस पर एक अहसान किया। जब जोसफ ने इस बात पर अधिकारी को कृतज्ञ देखा, तो उन्होंने उससे बदले में एक आग्रह किया।

जोसफ ने कहा, “जब तुम्हारे साथ सब अच्छा हो जाए, तो मुझे और मेरी दयालुता को याद करना; फ़ेराओ से मेरा ज़िक्र करना और मुझे जेल से बाहर निकलवाना। क्योंकि मुझे यहूदियों की भूमि से जबरन उठाकर लाया गया है और यहाँ भी मैंने जेल में सङ्घने लायक कोई काम नहीं किया है।”

जब कुछ दिनों बाद वह अधिकारी दरबार में लौट गया और सम्राट् ने दोबारा उसे अपने कृपापात्रों में शामिल किया, तो जोसफ रिहाई की उम्मीद करने लगे। वे हर पल उम्मीद करते रहते थे कि फ़ेराओ उन्हें आज़ाद कर रहे हैं, लेकिन वे इंतज़ार ही करते रहे। और करते रहे। आखिर दो साल बाद जाकर उस अधिकारी को जोसफ की याद आई और वह भी इसलिए, क्योंकि फ़ेराओ किसी से अपने एक सपने की व्याख्या कराना चाहते थे।

आखिरकार... . लाभ

अंत में जोसफ ने फ़ेराओ के सपने की सही व्याख्या कर दी। और चूँकि जोसफ नामक यहूदी में इतनी अधिक बुद्धिमत्ता थी, इसलिए मिस्त्र के शासक ने जोसफ को पूरे राज्य का प्रभारी बना दिया। जोसफ के नेतृत्व, नियोजन और भोजन संग्रह के तंत्र का परिणाम बहुत अच्छा रहा। जब सात साल बाद मध्य पूर्व में अकाल आया, तो जोसफ के तंत्र की बदौलत कई हजार लोग बच गए, जो उसके बिना मर जाते – जिनमें जोसफ का खुद का परिवार शामिल था। जब उसके भाई अकाल से राहत पाने के लिए यात्रा करके मिस्त्र पहुँचे – उसे दास बनाकर बेचने के बीस साल बाद – तो उन्हें पता चला कि उनका भाई जोसफ न सिर्फ़ ज़िंदा था, बल्कि संसार के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य में नंबर दो की स्थिति पर था।

बहुत कम लोग दास और कैदी के रूप में तेरह साल की विपत्ति का स्वागत करते। लेकिन जहाँ तक हम जानते हैं, जोसफ ने कभी उम्मीद या सही दृष्टिकोण नहीं छोड़ा। न ही उन्होंने कभी अपने भाइयों के खिलाफ़ मन में मैल रखा। जब उनके पिता का देहांत हुआ, तो जोसफ ने उनसे कहा, “तुम लोगों ने मेरा नुकसान करने की कोशिश की, लेकिन ईश्वर की इच्छा थी कि इससे वह नेकी का काम हो जाए, जो इस वक्त हो रहा है और जिससे कई लोगों की जान बच रही हैं।”

जोसफ ने अपने नकारात्मक अनुभवों में सकारात्मक लाभ खोजे। और आगर वे ऐसा कर सकते हैं, तो निश्चित रूप से हम भी कर सकते हैं। जब नज़रिये की बात आती है, तो ऐसा करने के लिए आपको अगला कदम उठाने की ज़रूरत है। आपको असफलता के साथ सकारात्मक ढंग से पेश आने में सक्षम होना चाहिए।

खंड 3

सही नज़रिये के साथ भविष्य

असफलता क्या है?

हर सफल इंसान वह है, जिसे असफलता तो मिली,
लेकिन उसने कभी खुद को असफल नहीं माना।

बरसों पहले एक इंटरव्यू में डेविड ब्रिंकली ने परामर्शदाता स्तंभकार एलन लैंडर्स से पूछा कि पाठक उनसे कौन सा सवाल सबसे ज्यादा पूछते हैं। उनका जवाब : “मेरे साथ क्या ग़लत है?”

लैंडर्स का जवाब मानव स्वभाव के बारे में बहुत कुछ उजागर करता है। बहुत से लोग असफलता की भावनाओं के साथ जूझते रहते हैं, जिनमें सबसे विनाशकारी हैं खुद के बारे में शंका के विचार। इन शंकाओं तथा भावनाओं के केंद्र में एक केंद्रीय प्रश्न है : क्या मैं असफल इंसान हूँ? और यह बहुत बड़ी समस्या है, क्योंकि मैं मानता हूँ कि जब कोई इंसान खुद को असफल मानता है, उस वक्त वह सफल नहीं हो सकता। इसके बजाय, आपको सही नज़रिये के साथ असफलता का सामना करना चाहिए और असफलता के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लेना चाहिए।

ऐसा लगता है कि परामर्शदाता स्तंभकार (स्वर्गीय एन लैंडर्स जैसे) और हास्य लेखक यह बात जानते हैं कि अपने बारे में अच्छा नज़रिया रखना विपत्ति और ग़लतियों से उबरने के लिए महत्वपूर्ण है। स्वर्गीय अर्मा बॉम्बेक ने 1996 में अपनी मृत्यु के कुछ सप्ताह पहले तक एक बहुत लोकप्रिय साप्ताहिक हास्य स्तंभ लिखा था। वे बहुत अच्छी तरह जानती थीं कि असफलता को दिल पर न लेते हुए जुटे रहने और असफलता के साथ आगे बढ़ने का क्या मतलब होता है।

न्यूज़पेपर कॉपी गर्ल से टाइम मैग्जीन की कवर गर्ल तक

अर्मा बॉम्बेक अपने करियर की शुरुआत से ही उस राह पर चली थीं, जो विपत्तियों से भरी थी। जीवन की शुरुआत असफलता क्या है? मैं ही पत्रकारिता ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया। किशोरावस्था में वे डेटन जर्नल-हेरॉल्ड में कॉपी गर्ल का काम करने लगीं। लेकिन जब वे ओहायो यूनिवर्सिटी में कॉलेज गईं, तो करियर मार्गदर्शक ने उन्हें सलाह दी, “लिखने के बारे में भूल जाओ।” उन्होंने यह सलाह मानने से इंकार कर दिया। बाद में उनकी बदली यूनिवर्सिटी ऑफ़ डेटन में हुई और 1949 में उन्होंने अँग्रेजी में डिग्री लेकर पढ़ाई पूरी कर ली। उसके बाद जल्द ही वे लेखक के रूप में काम करने लगीं-श्रद्धांजलि कॉलम और महिलाओं के पेज के लिए।

उस साल विपत्ति उनके व्यक्तिगत जीवन में भी आ गई। जब उन्होंने विवाह किया, तो उनकी सबसे गहरी इच्छा माँ बनने की थी। लेकिन उन्हें बहुत निराशा हुई जब उनके डॉक्टरों ने उन्हें बताया कि वे माँ नहीं बन सकतीं। क्या उन्होंने हार मान ली और खुद को असफल मान लिया? नहीं, उन्होंने तथा उनके पति ने गोद लेने की संभावना को टटोला और फिर एक बेटी को गोद ले लिया।

दो साल बाद अर्मा गर्भवती हो गई, जिससे वे बहुत हैरान हुईं। लेकिन इसके बाद भी उनके जीवन में मुश्किलें कम नहीं हुईं। चार साल में उन्हें चार बार गर्भ ठहरा, लेकिन सिर्फ़ दो ही बच्चे बच पाए।

1964 में अर्मा ने पड़ोस के एक छोटे अखबार केटरिंग-ओकवुड टाइम्स के संपादक को राज़ी कर लिया कि वह उन्हें एक साप्ताहिक हास्य स्टंभ लिखने दे। हर लेख के बदले में सिर्फ़ तीन डॉलर मिलते थे, लेकिन इसके बावजूद वे लिखती रहीं। और इससे उनके लिए एक द्वार खुल गया। अगले साल उनके पुराने नियोक्ता द डेटन जर्नल-हेरॉल्ड ने उनसे सप्ताह में तीन बार कॉलम लिखने का प्रस्ताव रखा। 1967 तक उनका कॉलम सिंडिकेट हो गया और नौ सौ से अधिक अखबारों में छपने लगा।

लगभग तीस साल तक अर्मा अपना हास्य कॉलम लिखती रहीं। इस दौरान उन्होंने पंद्रह पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। उन्हें अमेरिका की पच्चीस सर्वाधिक प्रभावशाली महिलाओं में से एक गिना गया। वे टेलीविज़न शो गुड मॉर्निंग अमेरिका में अक्सर आती थीं और उनकी तस्वीर टाइम मैग्जीन के कवर पर छपी। साथ ही उन्हें अमेरिकन कैंसर सोसाइटीज़ मेडल ऑफ़ ऑनर जैसे

असंख्य समान मिले। इसके अलावा उन्हें पंद्रह मानद उपाधियाँभी प्रदान की गईं।

अपने हिस्से की समस्याओं से ज्यादा

लेकिन सफलता की इस अवधि में अर्मा बॉम्बेक को अविश्वसनीय मुश्किलों और समस्याओं का भी अनुभव हुआ, जिनमें स्तन कैंसर, स्तन हटाना और गुर्दे की विफलता शामिल थीं। बहरहाल, उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों पर अपने दृष्टिकोण को बताने में कभी संकोच नहीं किया:

मैं कॉलेज के दीक्षांत समारोहों में बोलती हूँ और मैं हर एक को बताती हूँ कि मैं ऊपर वहाँ हूँ और वे नीचे वहाँ हैं, तो मेरी सफलता के कारण नहीं बल्कि मेरी असफलता के कारण। फिर मैं उन सभी असफलताओं को बताती हूँ—एक कॉमेडी रिकॉर्ड एलबम, जिसकी केवल दो प्रतियाँ बेरुत में बिकीं एक हास्य-नाटक, जो हमारे घर में डोनट जितना लंबा चला... एक ब्रॉडवे नाटक, जिसने कभी ब्रॉडवे का मुँह नहीं देखा ... बुक साइनिंग्स, जहाँ मैंने सिर्फ दो लोगों को आकर्षित किया : एक तो रेस्टरूम की दिशा पूछ रही थी और दूसरा डेस्क ख़रीदना चाहता था। आपको खुद को यह बताना है, “मैं असफल नहीं हूँ। मैं तो किसी काम को करने में असफल हुआ हूँ।” एक बड़ा अंतर है ... व्यक्तिगत रूप से और करियर की दृष्टि से, यह एक मुश्किल राह है। मैंने बच्चों को दफन किया है, माता - पिता को खोया है, कैंसर को झेला है और बच्चों की चिंताएँ की हैं। रहस्य इन सारी चीजों को सही दृष्टिकोण से देखना है ... और आजीविका के लिए मैं यही करती हूँ।

इस विजेता नजरिये ने अर्मा बॉम्बेक के पैर ज़मीन पर रखे। (वे अपना ज़िक्र “पूर्व होमरूम मदर और श्रद्धांजलि लेखिका” के रूप में करती हैं)। इसकी बदौलत वे चलती रहीं—और 69 साल की उम्र में मृत्यु तक लिखती भी रहीं—निराशाओं के बावजूद, दर्द, ऑपरेशनों और दैनिक किडनी डायलिसिस के बावजूद।

हर जीनियस “असफल” हो सकता था

हर सफल इंसान वह है , जिसे असफलताएँ तो मिलीं लेकिन उसने कभी खुद को असफल नहीं माना। मिसाल के तौर पर, वोल्फगैंग मोजार्ट, जो संगीत लेखन में उस्ताद थे। उन्हें सप्राट फर्डिनैन्ड ने बताया था कि उनके ऑपेरा द मैरिज ऑफ फिगारो में “बहुत ज्यादा शोर” है और उसमें “ज़रूरत से ज्यादा बहुत सारे नोट्स हैं।” चित्रकार विसेंट वान गॉग की पेंटिंग्स आजकल नीलामी में बिक्री के नए - नए रिकॉर्ड बनाती हैं , लेकिन अपने जीवनकाल में वे सिर्फ एक ही पेंटिंग बेच पाए थे। टॉमस एडिसन इतिहास के सबसे उर्वर आविष्कारक थे , लेकिन बचपन में उनके बारे में कहा जाता था कि वे कुछ नहीं सीख सकते। और हमारे युग के सबसे महान चिंतक अल्बर्ट आइंस्टाइन से म्यूनिख के एक स्कूल मास्टर ने कहा था कि वे “कभी ज्यादा कुछ नहीं बन पाएँगे। ”

मेरे ख्याल से यह कहना सुरक्षित है कि सारे महान सफल लोगों को यह मानने के बहुत से कारण दिए गए कि वे असफल हैं। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपने नज़रिये को सकारात्मक रखा और लगन से जुटे रहे। विपत्ति , अस्वीकृति और असफलताओं के सामने आने पर भी वे खुद पर यकीन करते रहे और स्वयं को असफल मानने से इंकार करते रहे। उन्होंने असफलता के बारे में सही नज़रिया विकसित करने का चुनाव किया।

असफल होकर आगे बढ़ना झूठा आत्म - सम्मान नहीं है

मैं लोगों की प्रशंसा करने को बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ , खास तौर पर बच्चों की। वास्तव में , मैं मानता हूँ कि लोग आपकी अपेक्षा के अनुरूप व्यवहार करते हैं। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि आपकी प्रशंसा के पीछे सच्चाई की बुनियाद होनी चाहिए। आपको दूसरों की झूठी तारीफ नहीं करनी चाहिए। यह वह नीति है , जिसका इस्तेमाल मैं दूसरों को प्रोत्साहित करने और उनका नेतृत्व करने के लिए अपनाता हूँ :

लोगों को महत्व दो।
प्रयास की प्रशंसा करो।
प्रदर्शन को पुरस्कार दो।

मैं इस विधि का इस्तेमाल हर एक के साथ करता हूँ। मैं अपने साथ भी इसका इस्तेमाल करता हूँ। जब मैं काम कर रहा होता हूँ , तो मैं खुद को तब तक कोई पुरस्कार नहीं देता , जब तक कि काम पूरा न हो जाए। जब मैं किसी काम या प्रोजेक्ट को करने जाता हूँ , तो मैं उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता हूँ और

परिणाम चाहे जो हो , मेरी अंतरात्मा साफ़ रहती है। उसकी वजह से मेरी रात की नींद ख़राब नहीं होती। और चाहे मैं कहीं भी असफल हुआ होऊँ या मुझसे कितनी भी ग़लतियाँ हुई हों , मैं उसकी वजह से इंसान के रूप में अपना मूल्य कम नहीं मानता हूँ। जैसी कहावत है, “ईश्वर उन लोगों का इस्तेमाल करता है , जो असफल होते हैं—क्योंकि इंस संसार में दूसरे प्रकार के लोग हैं ही नहीं।”

अपने बारे में सकारात्मक नज़रिया विकसित करना सम्भव है , चाहे आप खुद को कैसी भी परिस्थितियों में पाते हों या आपके पास किसी भी किस्म का इतिहास हो।

सात योग्यताएँ , जो असफल होकर आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं।

यहाँ सफल लोगों की सात योग्यताएँ बताई जा रही हैं , जिनकी बदौलत वे असफल होते हैं , लेकिन उसे दिल पर नहीं लेते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं :

1 . अस्वीकृति को अस्वीकार करें

लेखक जेम्स एलन कहते हैं , “ इंसान दरअसल वही होता है, जो वह सोचता है; , उसका चरित्र उसके सभी विचारों का पूर्ण महायोग होता है। इसीलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि आपकी सोच सही मार्ग पर हो।

जो लोग कोशिश करना नहीं छोड़ते , वे अपने मूल्य को अपने प्रदर्शन पर आधारित नहीं करते हैं। इसके बजाय , उनकी आत्म - छवि आंतरिक आधार पर बनती है। “मैं असफल इंसान हूँ,” यह कहने के बजाय वे कहते हैं , “ मैं उसे छूक गया,” या “मैंने एक ग़लती कर दी। ”

मनोवैज्ञानिक मार्टिन ई . सेलिंगमैन मानते हैं कि जब हम असफल होते हैं , तो हमारे पास दो विकल्प होते हैं : हम अपनी असफलता को या तो अंदर मोड़ सकते हैं या फिर बाहर मोड़ सकते हैं। जो लोग असफल होने पर खुद को दोष देते हैं। वे सोचते हैं कि वे मूल्यहीन , गुणहीन , न चाहने योग्य हैं , सेलिंगमैन कहते हैं। “ जो लोग बाहरी घटनाओं को दोष देते हैं , वे बुरी घटनाएँ होने पर भी अपने आत्म - सम्मान को नहीं ग़ंवाते हैं। ” सही दृष्टिकोण रखने के लिए अपने

कार्यों की ज़िम्मेदारी लें , लेकिन असफलता को व्यक्तिगत रूप से दिल पर न लें।

2 . असफलता को अस्थायी मानें

जो लोग असफलता को दिल पर लेते हैं , उन्हें कोई समस्या उस गड्ढे की तरह नज़र आती है , जिसमें वे स्थायी रूप से फँसे हैं। लेकिन सफल लोग किसी भी बुरी स्थिति को अस्थायी मानते हैं। मिसाल के तौर पर , अमेरिका के राष्ट्रपति हैरी एस . टूमैन का ही मामला देख लें। 1922 में वे 38 साल के थे , कर्ज में थे और बेरोज़गार थे। 1945 में वे स्वतंत्र संसार के सबसे शक्तिशाली नेता थे और अमेरिका के सर्वोच्च पद पर आसीन थे। अगर उन्होंने असफलता को स्थायी मान लिया होता , तो वे वहीं अटके रहते। उस स्थिति में उन्होंने कभी कोशिश जारी नहीं रखी होती और अपनी क्षमता पर यकीन नहीं किया होता।

3 . असफलताओं को अकेली घटनाओं के रूप में देखें

लेखक लियो बस्कैगलिया ने एक बार कुकिंग विशेषज्ञ जूलिया चाइल्ड के प्रति अपने प्रशंसा भाव के बारे में बताया था : “ मुझे उनका नज़रिया बड़ा ही प्यारा लगता है। वह कहती है , ‘ आज रात हम सूफ़ली बनाने वाले हैं ! ’ फिर वह अंडा फोड़ती है और उसे फेंटती है। इस दौरान वह चीज़ें फर्श पर गिरा देती है . . . और सारी अद्भुत इंसानी चीज़ें करती है। फिर वह एक सूफ़ली लेती है , उसे ओवन में डाल देती है और कुछ देर तक आपसे बात करती है। आखिरकार वह कहती है , ‘ अब यह तैयार है ! ’ लेकिन जब वह ओवन को खोलती है , तो सूफ़ली चपटे गोल केक की तरह दिखता है। लेकिन क्या इससे वह दहशत में आती है या उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं? नहीं ! वह तो मुस्कुराती है और कहती है , “ देखिए , आप हर बार तो जीत नहीं सकते। खुशनुमा भोजन करें ! ”

जब सफल लोग असफल होते हैं, तो वे इसे एक क्षणिक घटना के रूप में देखते हैं, न कि आजीवन अभिशाप के रूप में। यह व्यक्तिगत नहीं है। अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो किसी भी अकेली घटना को अपने दृष्टिकोण में नकारात्मक रंग न भरने दें।

4 . अपेक्षाओं को यथार्थवादी रखें

आप जितनी बड़ी चीज़ को हासिल करने की इच्छा रखते हैं, बाधाओं से उबरने और लंबे समय तक जुटे रहने की मानसिक तैयारी की भी उतनी ही ज्यादा ज़रूरत होगी। देखिए, यदि आप अपने पड़ोस में टहलना चाहते हैं, तो आप तार्किक रूप से उम्मीद कर सकते हैं कि अगर समस्याएँ आईं भी, तो छुटपुट ही आएँगी। लेकिन ऐसा तब नहीं होगा, जब आप माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का इरादा रखते हों।

संकटों से उबरने के लिए समय, प्रयास और योग्यता की ज़रूरत होती है। आपको हर दिन की शुरुआत तार्किक अपेक्षाओं के साथ करनी चाहिए और जब हर चीज़ आदर्श ढंग से न हो, तब भी आपकी भावनाएँ आहत नहीं होनी चाहिए।

1954 में बेसबॉल के शुरुआती दिन जो हुआ, वह इस बात को अच्छी तरह रेखांकित करता है। द मिल्वॉकी ब्रेव्ज़ और द सिनसिनाटी रेड्स का मैच चल रहा था। दोनों ही टीम ने उस मैच में एक - एक नया रुकी उतारा था, जो मेजर - लीग का पहला मैच खेल रहा था। रेड्स के लिए खेलने वाले रुकी ने चार डबल्स हिट किए और अपनी टीम की 9 - 8 के स्कोर के साथ जीतने में मदद की। ब्रेव्ज़ के लिए खेलने वाला रुकी योगदान नहीं दे पाया। द रेड्स का वह रुकी था जिम ग्रीनग्रास, जिसका नाम शायद आपने नहीं सुना होगा। दूसरी ओर, जिस रुकी ने एक भी हिट नहीं किया था, उसका नाम शायद आप जानते होंगे। उसका नाम था हैंक आरोन, वह खिलाड़ी जो आगे चलकर बेसबॉल के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ होम - रन हिटर बना।

अगर उस पहले मैच से आरोन अयथार्थवादी अपेक्षाएँ रखता, तो क्या होता? हो सकता है कि वह बेसबॉल ही छोड़ देता। निश्चित रूप से वह उस दिन अपने प्रदर्शन को लेकर खुश नहीं रहा होगा, लेकिन उसने खुद को असफल के रूप में नहीं देखा। उसने बहुत समय तक बहुत कड़ी मेहनत की थी। वह इसे नहीं छोड़ सकता था।

5 . शक्तियों पर ध्यान केंद्रित करें

सफल लोग असफलता को एक और तरीके से व्यक्तिगत नहीं मानते हैं। तरीका यह है कि वे अपनी शक्तियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। न्यू जर्सी डेविल्स हॉकी टीम के पूर्व प्रेसिडेंट बॉब ब्यूटेरा से पूछा गया कि विजेता किस चीज़ से बनता है। उन्होंने जवाब दिया, “ विजेताओं को पराजितों से अलग करने वाली चीज

यह है कि विजेता सारे समय उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो वे कर सकते हैं, उस पर नहीं जो वे नहीं कर सकते। यदि कोई खिलाड़ी बेहतरीन शूटर है, लेकिन बेहतरीन स्केटर नहीं है, तो हम उससे कहते हैं कि वह सिर्फ शॉट, शॉट, शॉट के बारे में सोचे - कभी यह न सोचे कि कोई दूसरा खिलाड़ी उससे स्केटिंग में आगे निकल रहा है। उद्देश्य यह है कि अपनी सफलताओं को याद रखा जाए।”

लेकिन अगर कमज़ोरी चरित्र में है, तो इस पर ज्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। इस पर तब तक ध्यान केंद्रित करें, जब तक कि वह गड़बड़ दुरुस्त न हो जाए। चारित्रिक मसलों को छोड़ दें, तो असफलता के बावजूद आगे बढ़ने के लिए सर्वश्रेष्ठ यही है कि आप अपनी शक्तियों को विकसित करके अधिकतम करें।

6 . उपलब्धि की नीतियों को बदलें

द साइकोलॉजी ऑफ अचीवमेंट में ब्रायन ट्रेसी चार मिलियनेर्स के बारे में लिखते हैं, जिन्होंने पैंतीस साल की उम्र तक अपनी दौलत बना ली थी। इस दौरान वे औसतन सत्रह कारोबारों में संलग्न रहे, तब कहीं जाकर उन्हें वह कारोबार मिला, जो उन्हें शिखर तक ले गया। वे कोशिश करते रहे, क्षेत्र बदलते रहे, जब तक कि उन्हें वह चीज़ नहीं मिल गई, जो उनकी खातिर काम करे।

सफल लोग समस्याओं के प्रति अपनी नीति बदलने के इच्छुक रहते हैं। यह सिर्फ कारोबार में ही नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। मिसाल के तौर पर, यदि आप ट्रैक - एंड-फील्ड खेलों को पसंद करते हैं, तो आपने बेशक खिलाड़ियों को हाई जम्प में प्रतिस्पर्धा करते देखा होगा। महिला और पुरुष उस खेल में जितनी ऊँचाई तक कूद लेते हैं, उसे देखकर मैं हमेशा आश्वर्यचकित रह जाता हूँ। सचमुच रोचक बात यह है कि 1960 के दशक में इस खेल की तकनीक में एक बड़ा बदलाव आया था, जिसने खिलाड़ियों को पुराने रिकॉर्ड तोड़ने और उन्हें नए स्तरों तक ऊपर पहुँचाने का अवसर दिया।

उस परिवर्तन के लिए जिम्मेदार व्यक्ति थे डिक फॉस्बरी। जहाँ पुराने खिलाड़ी हाई जम्प के लिए स्ट्रैडल तकनीक का इस्तेमाल करते थे, जिसमें वे बार के सामने चेहरा रखकर उसे पार करते थे, एक हाथ और एक पैर आगे रखते थे, वहाँ फॉस्बरी ने एक तकनीक विकसित की, जिसमें वे बार की तरफ पीठ रखते थे और सिर को सबसे पहले उसके पार ले जाते थे। इसे फॉस्बरी फ्लॉप कहा गया था। |

हाई-जम्प की एक नई तकनीक विकसित करना एक बात थी। उसे दूसरों से स्वीकार कराना बिलकुल ही अलग मामला था। फँस्बरी ने टिप्पणी की, “मुझसे बार-बार कहा गया कि मैं कभी सफल नहीं हो पाऊँगा और तकनीक कारगर नहीं होगी। मैं बस कंधे उचकाकर कह सकता था, ‘हम देखेंगे।’”

और लोगों ने सचमुच देखा। फँस्बरी ने 1968 में मेक्सिको सिटी ऑलंपिक्स में स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने पुराने ऑलंपिक रिकॉर्ड को तोड़ दिया और इस प्रक्रिया में एक नया विश्व कीर्तिमान बना दिया। तब से हाई जम्प करने वाले लगभग सभी विश्व-स्तरीय खिलाड़ी इस तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए फँस्बरी ने हाई जम्प के प्रति अपनी नीति बदली और उन्होंने एक सकारात्मक नज़रिया रखा, जिसकी बदौलत दूसरों की टिप्पणियों से उन्होंने खुद को असफल महसूस नहीं किया।

7. पलटकर उछलें

सभी सफल लोगों में किसी ग़लती, भूल या असफलता के बाद पलटकर उछलने की योग्यता होती है। मनोवैज्ञानिक सिमॉन कैरूथर्स कहती हैं, “जीवन परिणामों की श्रृंखला है। कई बार परिणाम वह होता है, जो आप चाहते हैं। बेहतरीन। पता लगाएँ कि आपने क्या सही किया। कई बार परिणाम वह होता है, जो आप नहीं चाहते हैं। बेहतरीन। | पता लगाएँ कि आपने क्या किया था, ताकि आप दोबारा वह काम न करें।” पलटकर उछलने की कुंजी है परिणाम के प्रति आपका नज़रिया।

सफल लोगों में आगे बढ़ते रहने की योग्यता होती है, चाहे जो हो जाए। और यह इसलिए संभव होता है, क्योंकि वे याद रखते हैं कि असफलता उन्हें असफल नहीं बनाती है। किसी को भी ग़लतियों को व्यक्तिगत तौर पर या दिल पर नहीं लेना चाहिए। यह असफलता के बाद खुद को उठाने और एक सकारात्मक नज़रिये के साथ जारी रखने का सबसे अच्छा तरीका है। एक बार जब आप यह कर लेते हैं, तो आप सफलता के लिए तैयार हो जाते हैं, जो अगले अध्याय का विषय है।

7.

सफलता क्या है?

नज़रिया तय करता है कि आप सफलता की
यात्रा पर कितनी दूर जा सकते हैं

क्या आप सफल होना चाहते हैं? सफलता की इच्छा रखने वाले अधिकतर लोगों के साथ समस्या यह नहीं है कि वे सफलता हासिल नहीं कर सकते। उनके लिए मुख्य बाधा यह है कि वे सफलता को ग़ालत लेते समझ देते हैं। इसके बारे में उनका नज़रिया सही नहीं होता। मैल्टबी डी. बैबकॉक का कहना है, “सबसे आम और सबसे महँगी ग़ालती यह सोचना है कि सफलता किसी जीनियस, किसी जादू, किसी ऐसी चीज़ के कारण मिलती है, जो हमारे पास नहीं है।”

सफलता क्या है? यह कैसी दिखती है? अधिकतर लोगों के मन में इसकी एक धुँधली तस्वीर होती है कि सफल इंसान बनने का क्या मतलब होता है। यह तस्वीर कुछ इस तरह दिखती है:

बिल गेट्स की दौलत,
अरनॉल्ड श्वाझनेगर का शरीर,
(या टायरा बैंक्स का शरीर),
अल्बर्ट आइंस्टाइन की बुद्धिमत्ता,
माइकल जॉर्डन की खेल योग्यता,
डोनाल्ड ट्रम्प की कारोबारी कुशलता,
जैकी केनेडी की सामाजिक शिष्टता और शांतीचित्तता,
वॉल्ट डिज़्नी की कल्पनाशक्ति, और
मदर टेरेसा का हृदय।

बचकाना लगता है, लेकिन हम चाहे इसे पसंद करें या न करें, यह सत्य के बहुत करीब है। हममें से कई लोग जब सफलता की तस्वीर देखते हैं, तो खुद के बजाय किसी दूसरे को देखते हैं। यह सफलता के बारे में सोचने का ग़लत तरीका है। अगर आपने इन दूसरे लोगों में से किसी एक के भी जैसा बनने की कोशिश की, तो आप सफलनहीं होंगे। आप बस उनकी बुरी नकल होंगे और आप वह इंसान बनने की संभावना को ख़त्म कर डालेंगे, जिसे बनने के लिए आपको भेजा गया था।

सफलता के बारे में ग़लत नज़रिया

मतले ही आप यह सोचने के जाल से बच जाएँ कि सफलता का मतलब किसी दूसरे इंसान जैसा बनना है, लेकिन फिर भी आपका सफलता के प्रति एक ग़लत नज़रिया हो सकता है। कई लोग ग़लती से इसे किसी तरह की उपलब्धि के साथ जोड़ देते हैं, किसी मंज़िल पर पहुँचने या किसी लक्ष्य को हासिल करने के साथ जोड़ देते हैं। यहाँ पर सफलता के बारे में कुछ सबसे आम ग़लत धारणाएँ हैं :

दौलत

सफलता के बारे में शायद सबसे आम ग़लतफहमी यह है कि दौलत ही सफलता का पर्याय है। बहुत से लोग मानते हैं कि अगर वे दौलत इकट्ठी कर लें, तो वे सफल हो जाएँगे। लेकिन याद रखें, दौलत से वर्तमान समस्याएँ ख़त्म नहीं होती हैं, बल्कि कई नई समस्याएँ और खड़ी हो जाती हैं। अगर आपको इस बात पर यकीन न हो, तो लॉटरी जीतने वालों के जीवन पर नज़र डालकर देख लें। दौलत से संतुष्टि या सफलता नहीं मिलती है।

एक ख़ास भावना

एक और ग़लत धारणा यह है कि जब लोग सफल या खुश महसूस करते हैं, तो वे सफल हैं। लेकिन सफल महसूस करने की कोशिश करना शायद दौलतमंद बनने की कोशिश से भी ज्यादा मुश्किल है। खुशी की लगातार खोज ही वह प्राथमिक कारण है, जिसकी वजह से इतने सारे लोग दुखी हैं। अगर आप खुशी

को अपना लक्ष्य बनाते हैं, तो आप लगभग निश्चित रूप से असफल होने के लिए अभिशप्त हैं। इस स्थिति में आप लगातार उपर-नीचे – नीचे होने वाले झूले पर रहेंगे और मूड के हर परिवर्तन के साथ सफल से असफल में बदलते रहेंगे। जीवन अनिश्चित है और भावनाएँ स्थिर या स्थायी नहीं होतीं। इसीलिए खुशी को सफलता का पैमाना नहीं माना जा सकता।

विशिष्ट और सार्थक संपत्तियाँ

उस समय के बारे में सोचें, जब आप बच्चे थे। संभवतः किसी समय आप किसी चीज़ को बुरी तरह चाहते थे और आपको यकीन था कि अगर आपके पास वह चीज़ आ जाए, तो उससे आपके जीवन में महत्वपूर्ण फ़र्क़ आ जाएगा। जब मैं नौ साल का था, तो मैं एक बार्गन्डी – और – सिल्वर श्विन बाइसिकल के बारे में कुछ ऐसा ही सोचता था, जो मुझे क्रिसमस पर मिली थी। लेकिन जल्द ही मुझे पता चला कि इसने मुझे वह सफलता या दीर्घकालीन संतुष्टि नहीं दी, जिसकी मुझे आशा और उम्मीद थी।

यह प्रक्रिया मेरे जीवन में कई बार दोहराई गई है। मैंने पाया कि सफलता तब नहीं आई, जब मैं अपनी हाई स्कूल बास्केटबॉल टीम का स्टार्टर बना, जब मैं कॉलेज में स्टूडेंट यूनियन का प्रेसिडेंट बना या जब मैंने अपना पहला मकान खरीदा। मैं जो संपत्ति चाहता था, उसका मालिक बनने के परिणामस्वरूप मुझे कभी सफलता नहीं मिली। संपत्तियाँ दरअसल अस्थायी समाधान हैं। सफलता इस तरह न तो हासिल की जाती है, न ही मापी जाती है।

शक्ति

चार्ल्स मैकेलरॉय ने एक बार मज़ाक में कहा था, “शक्ति आम तौर पर एक उत्कृष्ट अल्पकालीन अवसादक औषधि होती है। इस कथन में बहुत सी सच्चाई है, क्योंकि शक्ति अक्सर सफलता जैसी दिखती है, लेकिन इसके बावजूद अस्थायी होती है।

आपने शायद अँग्रेज़ इतिहासकार लॉर्ड एक्टन का यह उद्धरण सुना होगा: “शक्ति में भ्रष्ट करने की प्रवृत्ति होती है और निरंकुश शक्ति निरंकुश रूप से भ्रष्ट करती है।” अब्राहम लिंकन ने इसी मान्यता को दोहराते हुए कहा था, “लगभग सभी इंसान विपत्ति बर्दाशत कर सकते हैं, लेकिन अगर आप किसी व्यक्ति के

चरित्र को परखना चाहें, तो उसे शक्ति देकर देखें। ”शक्ति दरअसल चरित्र का इमतहान है। सच्चरित्र आदमी के हाथों में शक्ति बेहद लाभकारी होती है, जबकि तानाशाह के हाथों में यह भयंकर विनाश उत्पन्न कर देती है। शक्ति अपने आप में सकारात्मक या नकारात्मक नहीं होती। और यह सुरक्षा या सफलता का स्रोत भी नहीं होती। इसके अलावा यह तथ्य भी रहता है कि सभी तानाशाह - दयालु भी - अंततः शक्ति खो देते हैं।

उपलब्धि

कई लोगों में वह रोग होता है, जिसे मैं “मंजिल रोग” कहता हूँ। वे मानते हैं कि अगर वे कहीं पहुँच सकें कोई पद हासिल कर लें, कोई लक्ष्य हासिल कर लें या सही इंसान के साथ संबंध जोड़ लें - तो वे सफल हो जाएँगे। कभी मेरे मन में भी सफलता के बारे में यही विचार रहता था। मैंने इसे किसी पूर्व - निर्धारित सार्थक लक्ष्य की क्रमिक उपलब्धि के रूप में परिभाषित किया था। लेकिन समय के साथ मुझे अहसास हुआ कि यह परिभाषा कमतर है। सफलता लक्ष्यों की सूची नहीं है, जिनके हासिल करने पर उन्हें एक के बाद एक काटा जाए। सफलता का अर्थ किसी मंजिल पर पहुँचना नहीं है। यह तो एक यात्रा है।

सफलता के बारे में सही नज़रिया

यदि सफलता एक यात्रा है, तो आप शुरू कैसे करें? सफल होने के लिए क्या ज़रूरी है? दो चीज़ें ज़रूरी हैं। सफलता के प्रति सही नज़रिया और वहाँ पहुँचने के लिए सही सिद्धांत। एक बार जब आप सफलता को यात्रा मान लेते हैं, तो आप इसके प्रति सही नज़रिया क्रायम रख सकते हैं। फिर आप प्रक्रिया शुरू करने के लिए तैयार होते हैं। परिणाम हर व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकते हैं, लेकिन प्रक्रिया सबके लिए समान रहती है। सफलता की मेरी परिभाषा यह है :

सफलता है...

जीवन में अपने उद्देश्य को जानना,

अपनी अधिकतम क्षमता तक पहुँचने के लिए विकास करना, और

ऐसे बीज बोना, जिनसे दूसरों को लाभ हो।

जब आप सफलता के बारे में इस तरह से सोचते हैं, तो आप देख सकते हैं कि इसे मंजिल के बजाय यात्रा के रूप में क्यों देखा जाना चाहिए। चाहे आप कितना भी लंबा जी लें या जीवन में जो भी करने का निर्णय कर लें, जब तक आपके पास इसके बारे में सही नज़रिया रहेगा, आप कभी भी अपनी क्षमता की ओर विकास करने की क्षमता नहीं खोएँगे या दूसरों की मदद करने के अवसर कभी ख़त्म नहीं होंगे। जब आप सफलता को एक यात्रा के रूप में देखते हैं, तो आपको कभी किसी अंतिम मंज़िल पर “ पहुँचने की समस्या भी नहीं सताएगी। और आप कभी खुद को ऐसी स्थिति में नहीं पाएँगे, जहाँ आपने कोई अंतिम लक्ष्य हासिल कर लिया, लेकिन फिर आपको पता चला कि आप अब भी असंतुष्ट हैं और करने के लिए कोई दूसरी चीज़ तलाश रहे हैं।

सफलता के इन पहलुओं को बेहतर समझने के लिए आइए इनमें से प्रत्येक पर एक नज़र डालते हैं:

जीवन में अपने उद्देश्य को जानना

अपने उद्देश्य को जानने की जगह कोई चीज़ नहीं ले सकती। काय़ज़र एल्युमिनियम और काय़ज़र - परमानेंट हेल्प केयर सिस्टम के संस्थापक मिलियनेअर उद्योगपतिहेनरी जे. काय़ज़र ने कहा था, “इस बारे में बहुत सबूत हैं कि आप अपना सर्वश्रेष्ठ हासिल करना तब तक शुरू नहीं कर सकते, जब तक कि आप जीवन में कोई लक्ष्य तय न करें या इसे दूसरे तरीके से कहें तो, अगर आप अपने उद्देश्य को सक्रियता से खोजने की कोशिश नहीं करते हैं, तो इस बात की संभावना है कि आप गलत चीज़ों को करने में अपना जीवन बर्बाद कर देंगे।

मेरा मानना है कि ईश्वर ने हर इंसान को किसी उद्देश्य से बनाया था। मनोवैज्ञानिक विक्टर फ़ैंकल के अनुसार, “ हर व्यक्ति का जीवन में अपना खुद का एक विशेष ईश्वरीय आह्वान या मिशन होता है। हर एक को कोई निश्चित सौंपा हुआ काम पूरा करना होता है , जो पूरे होने की माँग करता है। इस काम को उसकी जगह कोई दूसरा नहीं कर सकता, न ही उसका जीवन दोहराया जा सकता है। इस तरह हर व्यक्ति का काम उतना ही अनूठा होता है, जितना कि उसके पास उसे करने का स्पष्ट अवसर होता है। ” हममें से हर एक का कोई न कोई उद्देश्य है, जिसके लिए हमें बनाया गया था। हमारी ज़िम्मेदारी - और हमारी सबसे बड़ी खुशी - इसे पहचानना है।

अपने उद्देश्य को पहचानने के लिए यहाँ कुछ सवाल हैं, जो आपको खुद से पूछने चाहिए :

मैं किसकी तलाश कर रहा हूँ? हम सभी के दिल में एक प्रबल इच्छा दफन रहती है, कोई ऐसी चीज़ जो हमारे सबसे गहरे विचारों और भावनाओं से संवाद करती है, जो हमारी आत्मा को सुलगा देती है। आपको तो बस इसे खोजने की ज़रूरत होती है।

मुझे क्यों बनाया गया था? हममें से प्रत्येक भिन्न होता है। अपनी योग्यताओं के अनूठे मिश्रण, अपने पास उपलब्ध संसाधनों, अपने व्यक्तिगत इतिहास और अपने आस - पास के अवसरों के बारे में सोचें। यदि आप इन घटकों को निष्पक्षता से पहचान लें और अपने दिल की इच्छा को खोज लें, तो जीवन में अपने उद्देश्य का पता लगाना ज्यादा आसान हो जाता है।

क्या मुझे अपनी क्षमता पर यकीन है? यदि आपको इस बात पर यकीन नहीं है कि आपमें क्षमता है, तो आप कभी उस तक पहुँचने की कोशिश ही नहीं करेंगे। आपको राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट की सलाह मान लेनी चाहिए जिन्होंने कहा था, “आपके पास जो भी है, आप जहाँ भी हैं, उससे जो भी कर सकते हैं, करें। अगर आप अपने जीवन के उद्देश्य पर अपनी नज़रें जमाकर ऐसा करते हैं, तो आपसे और ज्यादा की उम्मीद भी कैसे की जा सकती है?

मैं कब शुरू करूँ? इस सवाल का जवाब है अभी।

अपनी अधिकतम क्षमता तक पहुँचने के लिए विकास करना

उपन्यासकार एच. जी. वेल्स का मानना था कि दौलत, ख्याति, ओहदा और शक्ति किसी भी तरह की सफलता के पैमाने नहीं हैं। सफलता का एकमात्र सच्चा पैमाना तो इसका अनुपात है कि हम क्या बन सकते थे और हम क्या बन गए हैं। दूसरे शब्दों में, सफलता हमारी क्षमता के विकास से मिलती है।

हममें लगभग असीमित क्षमता है। बहरहाल, बहुत कम लोग कभी इस तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। क्यों? जवाब इसमें निहित है : हम कोई भी काम कर सकते हैं, लेकिन हम हर काम नहीं कर सकते। कई लोग अपने आस - पास के हर व्यक्ति को जीवन में अपने खुद के लक्ष्य संबंधी निर्णय लेने देते हैं। फलस्वरूप वे कभी जीवन में अपने उद्देश्य के प्रति दरअसल समर्पित ही

नहीं होते। नतीजा होता है कि वे सारे कामों में सामान्य रहते हैं, किंसी काम में माहिर नहीं बन पाते हैं। वे किसी एक काम पर केंद्रित या एकाग्र नहीं हो पाते।

यदि यह बात आपको अपने बारे में सही लगती है, तो आप शायद परिवर्तन के क़दम उठाने के लिए तैयार हैं। यहाँ चार सिद्धांत दिए जा रहे हैं, जो आपको अपनी क्षमता के विकास की राह पर ले जाएँगे :

1. एक मुख्य लक्ष्य पर एकाग्र हों

खुद को बीस दिशाओं में बिखराकर कोई भी कभी अपनी क्षमता तक नहीं पहुँच पाया है। अपनी क्षमता तक पहुँचने के लिए एकाग्रता की ज़रूरत होती है।

2. निरंतर सुधार पर ध्यान केंद्रित करें

वॉल्मार्ट संचालक मंडल की एकजीक्यूटिव कमिटी के चेयरमैन डेविड डी. ग्लास से एक बार पूछा गया कि उन्हें सबसे ज़्यादा पसंद कौन है। उनका जवाब था वॉल्मार्ट के संस्थापक सैम वॉल्टन। उन्होंने कहा था, ‘‘जब से मैं उन्हें जानता हूँ, उनके जीवन का एक दिन भी ऐसा नहीं गया, जब उन्होंने खुद में किसी तरह का सुधार न किया हो।’’ सतत सुधार के प्रति समर्पण ही अपनी क्षमता तक पहुँचने और सफल होने की कुंजी है।

3. अतीत को भूल जाएँ

वैन नाइज़ेर, कैलिफोर्निया में चर्च ऑन द वे के पादरी मेरे मित्र जैक हेक्फोर्ड ने कहा है, ‘‘अतीत मुर्दा लाश है और अगर हम इस लाश को अपने पीछे घसीटकर ला रहे हों, तो हम आने वाले कल की ओर तेज़ गति से नहीं बढ़ सकते।’’

यदि आपको प्रेरणा की ज़रूरत हो, तो उन लोगों के बारे में सोचें, जिन्होंने अजेय दिखने वाली बाधाओं को पार किया, जैसे बुकर टी.. वॉशिंगटन, हेलन केलर और फ्रैंकलिन डेलेनो रूज़वेल्ट। उनमें से प्रत्येक ने महान चीज़ें हासिल करने के लिए अविश्वसनीय बाधाओं को पार किया था। और यह बात याद रखें, आपने अतीत में चाहे जिस बाधा का सामना किया हो, आपमें उससे उबरने की क्षमता है।

4. भविष्य पर एकाग्र करें

बेसबॉल हॉल ऑफ फ्रेम में शामिल योगी बेरा ने घोषणा की थी, “भविष्य अब वह नहीं है, जो कभी हुआ करता था।” हालाँकि यह सच हो सकता है, लेकिन फिर भी यह एकमात्र जगह है, जहाँ हम जाने वाले हैं। चाहे आप आठ साल के हों, या अठारह, अड़तालीस या अस्सी के—आपकी क्षमता आपके सामने पड़ी हुई है। आपके पास अब भी खुद को बेहतर बनाने की जगह है। आप आज जो हैं, कल उससे बेहतर बन सकते हैं। जैसा स्पेनिश सूक्ति कहती है, “जो आगे नहीं देखता है, वह पीछे रह जाता है।”

ऐसे बीज बोना, जिससे दूसरों को लाभ हो

जब आप जीवन में अपने उद्देश्य को जान जाते हैं और अपनी अधिकतम क्षमता तक पहुँचने के लिए विकास करने लगते हैं, तो आप सफल होने की राह पर अच्छी तरह चलने लगते हैं। लेकिन सफलता की यात्रा का एक और अनिवार्य हिस्सा है : दूसरों की मदद करना। इस पहलू के बिना हमारी यह यात्रा एकाकी और खोखला अनुभव हो सकती है।

कहा गया है कि हम आजीविका उससे बनाते हैं, जो हमें मिलता है, लेकिन जीवन उससे बनाते हैं, जो हम देते हैं। डॉक्टर, धर्मशास्त्री और दार्शनिक अल्बर्ट श्वाइट्जर ने इसे अधिक शक्तिशाली ढंग से कहा था, “मानव जीवन का उद्देश्य है सेवा करना, करुणा दिखाना और दूसरों की मदद करने की इच्छा रखना। उनकी सफलता की यात्रा उन्हें अफ्रीका ले गई, जहाँ उन्होंने कई वर्षों तक लोगों की सेवा की।

आपके लिए शायद दूसरों को लाभ पहुँचाने वाले बीज बोने का मतलब भिन्न होगा। हो सकता है कि यह गरीबों की सेवा करने के लिए किसी दूसरे देश की यात्रा करना न हो – जब तक कि यही वह उद्देश्य न हो, जिसे पूरा करने के लिए आपने जन्म लिया हो। (और आगर यह है, तो आप तब तक संतुष्ट नहीं होगे, जब तक कि आप यही न कर रहे हों।) बहरहाल, आगर आप अधिकतर लोगों जैसे हैं, तो दूसरों की मदद करना एक ऐसी चीज़ है, जिसे आप अपने आस – पास ही कर सकते हैं, चाहे यह अपने परिवार के साथ अधिक समय बिताना हो, किसी क्षमतावान कर्मचारी को विकसित करना हो, समुदाय के लोगों की मदद करना हो या ऑफिस में अपनी टीम की खातिर अपनी इच्छाओं को दबाना हो। कुंजी है अपना उद्देश्य खोजना और उसका पीछा करते समय

दूसरों की मदद करना। मनोरंजनकर्ता डैनी टॉमस ने जोर दिया था कि “हम सभी किसी कारण से पैदा होते हैं, लेकिन हम सभी को पता नहीं होता कि वह कारण क्या है। जीवन में सफलता का इस बात से कोई संबंध नहीं है कि आप जीवन में या खुद के लिए क्या हासिल करते हैं। इसका संबंध तो इस बात से है कि आप दूसरों के लिए क्या करते हैं।”

हम आजीविका उससे बनाते हैं, जो हमें मिलता है लेकिन जीवन उससे बनाते हैं जो हम देते हैं।

सफलता का सही दृष्टिकोण रखने से आपको खुद के तथा जीवन के बारे में सकारात्मक नज़रिया रखने में मदद मिल सकती है, चाहे आपकी पारंस्थितियाँ कैसी भी हों। और अगर आप अपने नेतृत्व में चल रहे लोगों में भी सफलता का यही दृष्टिकोण भर सकें, तो आप हमेशा आशावान रहने और सफल होने में उनकी मदद कर सकते हैं। क्यों? क्योंकि सभी लोग – चाहे उनकी योग्यता, शिक्षा या परवरिश का स्तर कैसा भी हो – अपने उद्देश्य को जानने में सक्षम हैं, अपनी अधिकतम क्षमता तक विकास करने में सक्षम हैं और ऐसे बीज बोने में सक्षम हैं, जिनसे दूसरों को लाभ हो। और लोगों की मदद करने का नाम ही तो दरअसल लीडरशिप है।

लेकिन अगर आप नज़रिये के क्षेत्र में सफल लीडर बनना चाहते हैं, तो आपको एक और सच्चाई जानने की ज़रूरत है। और यह आपको अंतिम अध्याय में मिलेगी।

लीडर किस तरह चढ़ता रह सकता है?

ऊपर जाने के लिए लीडर्स को छोड़ना पड़ता है।

आज कई लोग कंपनी की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ना चाहते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि ऊपर स्वतंत्रता और शक्ति के पुरस्कार उनका इंतज़ार कर रहे हैं। उन्हें इस बात का अहसास ही नहीं होता कि लीडरशिप की सच्ची प्रकृति दरअसल त्याग है।

अधिकतर लोग यह मानेंगे कि लीडरशिप करियर की शुरुआत में त्याग आवश्यक होते हैं। क्षमता के अवसर हासिल करने के लिए लोग कई चीज़ें छोड़ते हैं। मिसाल के तौर पर, टॉम मर्फी 1937 में जनरल मोटर्स में काम करने लगे। लेकिन वे उस कंपनी में मिलने वाले पहले पद को ठुकराने वाले थे, क्योंकि सौ डॉलर प्रति माह की तनख्वाह में उनका खर्च मुश्किल से चल सकता था। अपनी शंकाओं के बावजूद उन्होंने वह नौकरी कर ली और सोचा कि यह अवसर त्याग करने लायक है। वे सही थे। मर्फी अंततः जनरल मोटर्स के संचालक मंडल के चेयरमैन बने।

त्याग नेतृत्व में स्थायी घटक होता है। यह एक बार का भुगतान नहीं, बल्कि अनवरत प्रक्रिया है। यह एक ऐसा नज़रिया है, जिसे हर सफल लीडर को कायम रखना होता है। जब मैं पलटकर अपने करियर को देखता हूँ, तो मुझे साफ़ नज़र आता है कि मैंने आगे बढ़ने के लिए हमेशा कोई न कोई कीमत चुकाई है। बाईंस साल की उम्र के बाद मैंने जो भी करियर परिवर्तन किए हैं, आर्थिक क्षेत्र में यह मेरे लिए सच रहा है। जब भी आप जान जाएँ कि क्रदम सही है, तो त्याग करने से न झिझकें।

ऊपर जाने के लिए आपको छोड़ना पड़ता है

जो लीडर्स ऊपर उठना चाहते हैं, उन्हें तनख्वाह में कभी - कभार की कटौती से अधिक कीमत चुकानी होती है। उन्हें अपने अधिकार भी छोड़ने होते हैं। जैसा मेरे मित्र जेराल्ड बुक्स कहते हैं, “जब आप लीडर बनते हैं, तो आप के बारे में सोचने का अधिकार गँवा देते हैं।” हर खुद व्यक्ति के लिए त्याग की प्रकृति भिन्न हो सकती है। ऊपर चढ़ने के लिए लीडर्स को छोड़ना होता है। यह हर लीडर के बारे में सच है, चाहे उसका पेशा कोई भी हो। किसी भी लीडर से बात करके देख लें, आप हमेशा पाएँगे कि उसने लगातार त्याग किए हैं। आम तौर पर लीडर जितनी ऊँचाई तक चढ़ा है, वह उतने ही ज्यादा बड़े त्याग करता है।

आप जितने ऊपर पहुँचते हैं, आपको उतना ही ज्यादा छोड़ना होता है

संसार का सबसे शक्तिशाली लीडर कौन है? मेरे ख्याल से, अमेरिका के राष्ट्रपति। उनके कार्य और शब्द न सिर्फ अमेरिका, बल्कि पूरे संसार के लोगों पर किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक प्रभाव डालते हैं। इस बारे में सोचें कि राष्ट्रपति पद पर पहुँचने और फिर वहीं बने रहने के लिए उन्हें क्या - क्या छोड़ना पड़ता है। उनका समय उनका खुद का नहीं होता। पैनी निगाहें लगातार उनकी जाँच करती हैं। उनका परिवार जबर्दस्त दबाव में रहता है। और सामान्य दिनचर्या में उन्हें ऐसे निर्णय लेने होते हैं, जिनकी वजह से सैकड़ों लोगों की जान जा सकती है। जब वे पद छोड़ देते हैं, तब भी वे अपना बाकी जीवन सीक्रेट सर्विस एजेंट्स के साथ गुजारते हैं, जो शारीरिक क्षति से उनकी रक्षा करते हैं।

लीडर जितना ज्यादा बड़ा होता है, उसे उतना ही ज्यादा छोड़ना होता है। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर जैसे इंसान के बारे में सोचें। उनकी पत्नी कोरेटा स्कॉट किंग ने माई लाइफ विद मार्टिन लूथर किंग, जूनियर में टिप्पणी की थी , “दिन - रात हमारे फोन की घंटी बजती थी और कोई न कोई हमें गालियाँ देता रहता था... अक्सर फोन के अंत में धमकी दी जाती थी कि अगर हमने शहर नहीं छोड़ा, तो वे हमारी जान ले लेंगे। लेकिन सारे खतरों के बावजूद , हमारे निजी जीवन की गड़बड़ियों के बावजूद मैं प्रेरित, लगभग उल्लासमयी महसूस करती थी।”

सिविल राइट्स मूवमेंट के दौरान लीडरशिप की अपनी यात्रा में किंग को कई मौकों पर गिरफ्तार किया गया और जेल में रखा गया। उन्हें पत्थर मारे गए, चाकू मारे गए और उन पर शारीरिक हमले हुए। उनके मकान पर बम फेंके गए। लेकिन उनकी भविष्य - दृष्टि - और उनका प्रभाव - बढ़ता रहा। अंततः उन्होंने अपने पास की हर चीज का त्याग कर दिया। लेकिन उन्होंने जो भी त्याग किया, दिल से किया। अपने आखिरी भाषण में, जो मेम्फिस में उनकी हत्या के पहले वाली रात को दिया गया, उन्होंने कहा था ,

मैं नहीं जानता कि अब मेरे साथ क्या होगा। हमारे सामने कुछ मुश्किल दिन हैं। लेकिन अब मुझे उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। क्योंकि मैं पर्वत शिखर पर रह चुका हूँ। मुझे फ़र्क नहीं पड़ता। किसी दूसरे इंसान की तरह मैं भी एक लंबा जीवन जीना चाहूँगा। दीर्घायु की अपनी जगह है। लेकिन हाल - फिलहाल मुझे उसकी चिंता नहीं है। मैं तो बस ईश्वर की इच्छा पूरी करना चाहता हूँ। और उसने मुझे पर्वत के ऊपर चढ़ने की अनुमति दी है। और मैंने वहाँ से देखा है और ईश्वर द्वारा दिए प्रदेश को देख लिया है। हो सकता है कि मैं आपके साथ वहाँ न जा पाऊँ, लेकिन मैं आज रात आपको बताना चाहता हूँ कि हम, एक समूह के रूप में, ईश्वर द्वारा दिए प्रदेश में पहुँचेंगे। इसलिए मैं आज रात को खुश हूँ... मुझे किसी इंसान से डर नहीं लग रहा है। “मेरी आँखें ईश्वर के आने के आनंद को देख चुकी हैं।”

अगले दिन उन्होंने त्याग की चरम कीमत चुकाई। किंग का प्रभाव गहन था। उन्होंने लाखों - करोड़ों लोगों को एक ऐसे तंत्र और समाज के खिलाफ शांति से खड़े रहने के लिए प्रभावित किया, जो उन्हें अलग रखने के लिए संघर्ष कर रहा था।

आप लीडरशिप के जितने ऊँचे स्तर पर पहुँचना चाहते हैं, आपको उतने ही बड़े त्याग करने होंगे।

सफल लोग जिसे सच पाते हैं, वह लीडर बनने के बाद उनके सामने और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। त्याग के नजरिये के बिना कोई सफलता नहीं मिलती। आप लीडरशिप के जितने ऊँचे स्तर पर पहुँचना चाहते हैं, आपको उतने ही बड़े त्याग करने होंगे। ऊपर पहुँचने के लिए आपको छोड़ना होता है। यही लीडरशिप की सच्ची प्रकृति है। यही सही नजरिये की शक्ति है।

लेखक के बारे में

जॉन सी. मैक्सवेल अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेतृत्व विशेषज्ञ, वक्ता और लेखक हैं, जिनकी 1.6 करोड़ से अधिक पुस्तकें बिक चुकी हैं। उनके संगठनों ने संसार भर के 20 लाख से अधिक लीडर्स को प्रशिक्षित किया है। डॉ. मैक्सवेल इक्विप और इनजॉय स्टुअर्डशिप सर्विसेस के संस्थापक हैं। हर साल वे फँस्टचून 500 कंपनियों, अंतरराष्ट्रीय सरकारी लीडर्स और श्रोताओं के सामने बोलते हैं, जिनमें युनाइटेड स्टेट्स मिलिट्री अकैडमी, द नेशनल फुटबॉल लीग और संयुक्त राष्ट्र संघ के राजदूत शामिल हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स, वॉल स्ट्रीट जर्नल और बिज़नेस वीक के बेस्टसेलिंग लेखक मैक्सवेल को लीडरशिपगुरुज़ डॉट नेट ने विश्व के शीर्ष नेतृत्व गुरु का खिताब दिया है। वे उन 25 लेखकों और चित्रकारों में से एक भी हैं, जिन्हें एमेज़ॉन डॉट कॉम के 10वीं एनिवर्सरी हॉल ऑफ फेम के लिए चुना गया। उनकी तीन पुस्तकें द 21 इररिफ्युटेबल लॉज़ ऑफ लीडरशिप, डेवलपिंग द लीडर विदिन यू, और द 21 इनडिस्पेंसेबल क्वालिटीज़ ऑफ अ लीडर में से प्रत्येक की दस लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं।